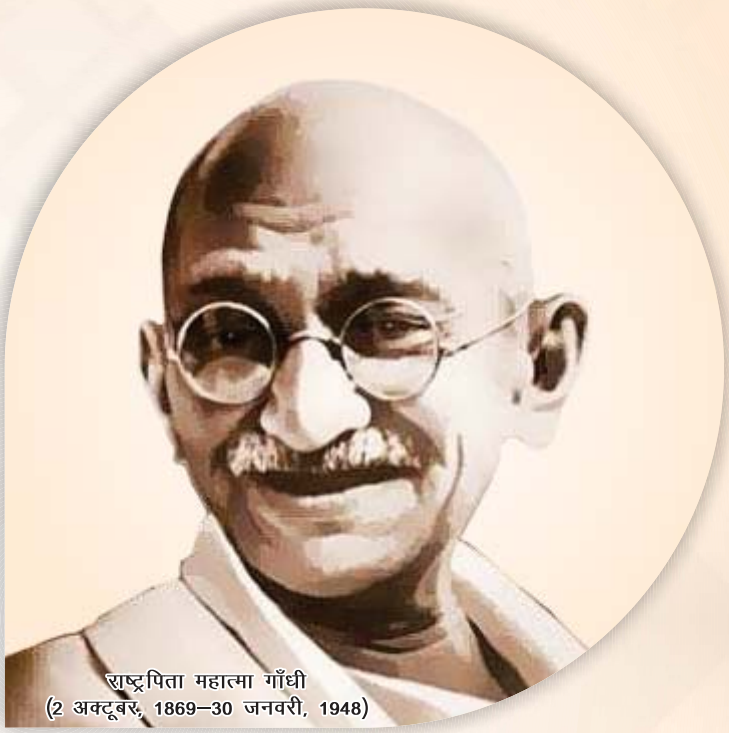

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी
(2 अक्टूबर, 1869–30 जनवरी, 1948)

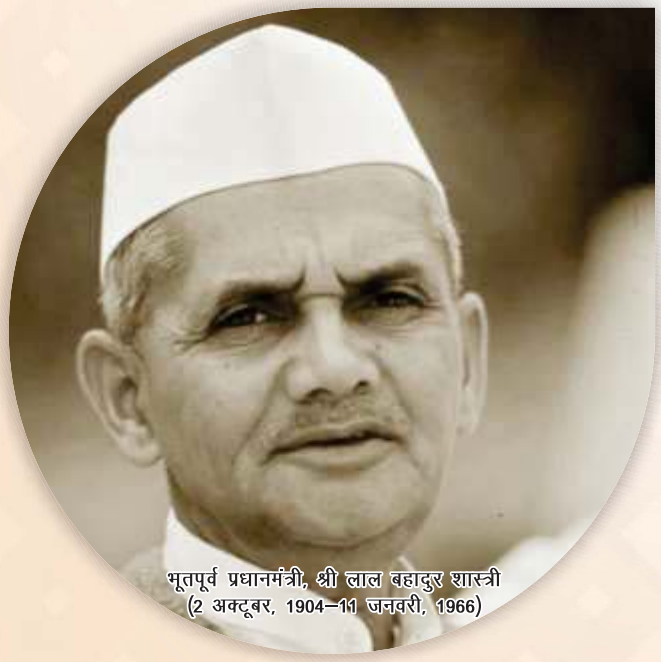

भूतपूर्व प्रधानमंत्री, श्री लाल बहादुर शास्त्री
(2 अक्टूबर, 1904–11 जनवरी, 1966)

प्रेरणा

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश की मासिक पत्रिका

वर्ष 1 | तृतीय अंक | अक्टूबर-2020

अभिभावकों और प्रिय बच्चों से अपील
मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला
बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा बच्चों की शिक्षा के लिए विभिन्न माध्यमों से ई–पाठशाला चलाई जा रही है। कृपया इसमें सहभागी बनें।
योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
डा. सतीश चन्द्र द्विवेदी
मा. राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), बेसिक शिक्षा
प्रेरणा लक्ष्य
मिशन प्रेरणा के मुख्य घटक
दूरदर्शन
दूरदर्शन के प्राइमरी चैनल DD UP पर प्रत्येक दिन प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक कक्षावार एवं विषयवार शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा है, इसे जरूर दिखाएं।
'दीक्षा' ऐप
पाठ्यक्रम के प्रत्येक अध्याय के बारे में 5000 से अधिक वीडियो उपलब्ध है। QR कोड स्कैन करें, उनका लाभ उठाएं।
निःशुल्क 'दीक्षा' मोबाइल ऐप
डाउनलोड करने हेतु QR CODE स्कैन करें
Google play
डाउनलोड करें
Read along App.
गूगल का राज्य के साथ अनुबन्ध, जिसके अन्तर्गत कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों का रोचक कहानियों के माध्यम से मौखिक पठन-पाठन को बढ़ावा देने हेतु निःशुल्क ऐप।
आकाशवाणी
आकाशवाणी के प्राइमरी चैनल MW 747 Khz. पर उक्त कार्यक्रम प्रत्येक दिन पूर्वाह्न 11 बजे से 12 बजे तक प्रसारित किया जा रहा है, इसे जरूर सुनाएं।
व्हाट्सऐप
अध्यापकों द्वारा 1.5 लाख व्हाट्सऐप ग्रुप के माध्यम से प्रतिदिन कक्षावार एवं विषयवार शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करायी जा रही है, आप भी जुड़ें और इसको पढ़कर लाभ उठाएं।
वेबसाइट
www.prernaup.in
में समस्त कक्षाओं हेतु विषयवार सामग्री उपलब्ध है, उनका लाभ उठाएं
मिशन प्रेरणा-फेज 2
हर दिन की कार्य योजना से सम्बन्धित सामग्री।
मासिक पंचांग के अनुसार पाठ्यक्रम विभाजन।
अभिभावक, बच्चे एवं शिक्षक को एक साथ ले कर चलने के लिए ई-पाठशाला का इन सभी का समन्वय बनाने हेतु फोकस।
रोचक गतिविधि और घर पर बनाये TLM से सब साथ मिलकर पढ़ेंगे।
पाठ्य पुस्तक और कार्यपुस्तिका हर घर तकपहुंचाना।
मिशन प्रेरणा के यूट्यूब चैनल को सब्सक्राइब करें https://www.youtube.com/MissionPrerna
बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश @basicshiksha_up Department of Basic Education Uttar Pradesh www.prernaup.in

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश की मासिक पत्रिका

प्रेरणा

वर्ष 1 | तृतीय अंक | अक्टूबर-2020

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश

विद्या भवन, निशातगंज, लखनऊ
ईमेल : prernapatrikabasicedu@gmail.com
फोन नं. : 0522-2780391

संरक्षक

डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी,
मा. मंत्री, बेसिक शिक्षा विभाग,
उत्तर प्रदेश

सह संरक्षक

श्रीमती रेणुका कुमार, IAS
अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा,
उ.प्र. शासन

निर्देशन

श्री विजय किरन आनन्द, IAS
महानिदेशक
स्कूल शिक्षा, उत्तर प्रदेश

प्रधान सम्पादक

डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह,
शिक्षा निदेशक (बेसिक)

नोडल अधिकारी,

श्री राजेश कुमार शाही,
सहा. उप निदेशक,
मध्यान्ह भोजन प्राधिकरण

सम्पादक

डॉ. के.बी. त्रिवेदी

सम्पादक मण्डल

1. निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., उ.प्र. लखनऊ
2. निदेशक साक्षरता, साक्षरता निदेशालय, उ.प्र. लखनऊ
3. श्री मुमताज अहमद, वित्त नियन्त्रक म.भो.प्रा., उ.प्र. लखनऊ
4. श्री पवन कुमार सचान, प्राचार्य डायट, लखनऊ
5. श्री गुरमिन्दर सिंह, सलाहकार समग्र शिक्षा अभियान, लखनऊ

प्रेरणा पत्रिका प्रकाशन सामग्री संकलन समिति

1. श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., लखनऊ — अध्यक्ष
2. श्री राजेश कुमार शाही, सहा. उप निदेशक, म.भो.प्रा., उ.प्र. लखनऊ — सदस्य
3. श्री गुरमिन्दर सिंह, सलाहकार, समग्र शिक्षा अभियान लखनऊ — सदस्य
4. श्री बाल गोबिन्द मौर्य, वरिष्ठ प्रवक्ता डायट लखनऊ — सदस्य
5. श्रीमती पूनम उपाध्याय, प्रवक्ता डायट, लखनऊ — सदस्य

प्रेरणा पत्रिका के वितरण सम्बन्धी समिति

1. श्री अब्दुल मुबीन, सहायक निदेशक, बेसिक शिक्षा निदेशालय लखनऊ — अध्यक्ष
2. श्री संजय कुमार शुक्ल प्रशासनिक अधिकारी, समग्र शिक्षा अभियान लखनऊ — सदस्य
3. श्रीमती पुष्पा रंजन, प्रशासनिक अधिकारी, एस.सी.ई.आर.टी. लखनऊ — सदस्य

टंकण सहयोग

1. श्री संजय कुमार, कम्प्यूटर आपरेटर, म.भो.प्रा., लखनऊ
2. श्री संदीप मौर्या, कनिष्ठ सहायक, साक्षरता निदेशालय, लखनऊ

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	4
2.	फोटो फीचर	5
3.	बेसिक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने का अभिनव प्रयास : मिशन प्रेरणा	8
4.	उत्तर प्रदेश–प्रेरक प्रदेश (कविता)	9
5.	मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला	10
6.	विद्यालयों की बदलती तस्वीर (जनपद–बरेली)	11
7.	विद्यालयों की बदलती तस्वीर (जनपद–बहराइच)	13
8.	नई शिक्षा नीति	15
9.	नई शिक्षा नीति और बेसिक शिक्षा	18
10.	अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक	11
11.	राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक	22
12.	राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक	23
13.	एक विद्यालय ऐसा जहां मिलती है कॉन्वेंट जैसी शिक्षा (जनपद–बरेली)	24
14.	ऐसा विद्यालय जहां प्रवेश पाकर बच्चे गौरान्वित होते हैं (जनपद–गोण्डा)	26
15.	एक ऐसा प्राथमिक विद्यालय, जिसके सामने प्राइवेट विद्यालय न टिक सके (जनपद बाराबंकी)	28
16.	जनपद सोनभद्र का आदर्श विद्यालय–मगरदहा	29
17.	विद्यालयों में किचेन गार्डेन : पोषण एवं सुरक्षा साथ–साथ	31
18.	पूर्व माध्यमिक विद्यालय जन्धेड़ी : किचेन गार्डेन में नवीन प्रयोग/जल जीवन मिशन	33
19.	कोरोना काल में मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था/विद्यालय खुलने पर करोना से बचाव हेतु सुझाव	34
20.	समावेशी शिक्षा–एक प्रयास	35
21.	पूर्व प्राथमिक स्तर (3–6 वय–वर्ग) हेतु पाठक्रम का विकास	37
22.	Diksha - One Nation One Digital Platform	39
23.	Role of E-learning & Networking in Teacher Education	40
24.	कम्यूनिटी लर्निंग प्वाइण्ट और हमने सीखा कार्यक्रम	41
25.	लीप (छलांग)	43
26.	कहानियों द्वारा शिक्षण	45
27.	कुन्बा (कहानी)	45
28.	संख्या पहचानने का अनोखा प्रयास	46
29.	उन्नत होगी शिक्षा (कविता)/ग़ज़लें	47
30.	सुर्खियों में बेसिक शिक्षा	48

❖❖❖

सम्पादकीय

बेसिक शिक्षा किसी व्यक्ति के जीवन की वह बुनियाद है, जिस पर उसके भविष्य का निर्माण होता है। बेसिक शिक्षा के दौरान ही किसी व्यक्ति को अक्षर, भाषा, गणित जैसे विषयों का प्रारम्भिक ज्ञान मिलने के साथ ही उसके संस्कार और चरित्र का निर्माण होता है। कहा जाता है कि अगर नीव मजबूत होगी तभी इमारत बुलन्दियों को छूती है। नयी शिक्षा नीति में भी प्रारम्भिक शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। शिक्षा रूपी इस नीव को मजबूत करने में बेसिक शिक्षा विभाग के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका का निष्पादन कर रहे हैं। इस करोना काल में इनका दायित्व और गुरूतर हो गया है। छात्रों को घरों में रहते हुये उन्हें ऑनलाइन, मोबाइल, यू–ट्यूब, व्हाट्सएप ग्रुप आदि के माध्यम से शिक्षित करना और शिक्षण गुणवत्ता बनाये रखना आसान नहीं है। इसी क्रम में विगत 21 सितम्बर, 2020 को मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला के फेज–2 का शुभारम्भ किया गया है, जिसमें शिक्षकों द्वारा भाषा, गणित व अन्य विषयों पर निर्धारित मानको के अनुसार शिक्षण कार्य करना है। शिक्षकों और बेसिक शिक्षा विभाग के समस्त कर्मियों के शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे योगदान और उनके उत्कृष्ट कार्यों को संकलित कर विभाग की मासिक पत्रिका ''प्रेरणा'' में प्रकाशित किया जाता है।

''प्रेरणा'' पत्रिका के माह अक्टूबर, 2020 के अंक में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा संचालित आपरेशन कायाकल्प, मिशन प्रेरणा के सम्बन्ध में नवीनतम् जानकारी और गतिविधियों का समावेश किया गया है। नयी शिक्षा नीति भविष्य की आवश्यकताओं के साथ–साथ रोजगार के नये अवसरों के द्वार खोलेगी। पत्रिका के इस अंक नयी शिक्षा नीति के साथ ही नयी शिक्षा नीति और बेसिक शिक्षा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण आलेखों का संकलन किया गया है।

बेसिक शिक्षा विभाग में अनेक ऐसे शिक्षक हैं जिन्होंने अपने उत्कृष्ट कार्यों से अर्न्तराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर विभाग का गौरव बढ़ाया है, उन्हें भी पत्रिका में स्थान दिया गया है। शिक्षकों के प्रयास से बहुत से ऐसे विद्यालयों का कायाकल्प भी किया गया हैं, जो दूसरे विद्यालयों के लिये प्रेरक बन सकते हैं। ऐसे विद्यालयों के उत्कृष्ट कार्यों को आप तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है। हमारे बीच बहुत से नवोन्मेषी शिक्षक हैं, जो शैक्षिक नवाचारों से शिक्षा की गुणवत्ता में निरन्तर वृद्धि कर रहे हैं उनके नवाचार तथा ऐसे शिक्षक जिनकी रचना धर्मिता काव्य के रूप में प्रस्फुटित होती है, उसको भी पत्रिका में स्थान दिया गया है।

प्रेरणा पत्रिका के इस अंक को सारगर्भित बनाने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग के लिये समस्त महानुभावों का आभार प्रकट करता हूँ। पत्रिका के इस अंक के माध्यम से बेसिक शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे उत्कृष्ट कार्यों को आम जनमानस तक पहुंचाने में सफलता मिलेगी।

प्रेरणा पत्रिका का यह अंक बेसिक शिक्षा विभाग के अनेक हितग्राहियों और पाठ्कों को नित्य नयी प्रेरणा प्रदान करेगा। आप सभी के सहयेाग से पत्रिका की यह यात्रा निरन्तर जारी रहेगी। आपके आलेखों और सुझावों से प्रेरणा पत्रिका का यह अंक बेसिक शिक्षा को नई दिशा प्रदान करेगा।

(डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह)
शिक्षा निदेशक (बेसिक)

मा. मुख्यमंत्री, उ.प्र., श्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा बेसिक शिक्षा विभाग में चयनित सहायक अध्यापकों को नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम

दिनांक 16 अक्टूबर, 2020

उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सरकारी आवास पर दिनाँक 16 अक्टूबर, 2020 को बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पाँच नवनियुक्त शिक्षकों को नियुक्ति पत्र देकर नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यक्रम में बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी की गरिमामय उपस्थिति में माननीय मुख्यमंत्री ने बेसिक शिक्षा विभाग के नवनियुक्त अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि 69000 शिक्षकों की भर्ती में नवनियुक्त 31277 शिक्षकों में 6675 शिक्षा मित्र भी हैं। यह खुशी की बात है शिक्षा मित्रों ने अपनी क्षमता का प्रमाण दिया और उन्हें शिक्षक बनने का अवसर प्राप्त हुआ है।

कैमरे की नज़र में कार्यक्रम के मुख्य अंश

फोटो फीचर

फोटो फीचर

योगी आदित्यनाथ
प्रक्रिया के माध्यम से
का
आदित्यनाथ
योगी आदित्यनाथ
निष्पक्ष एवम् पारदर्शी
भर्ती प्रक्रिया
का
बाँदा, गोरखपुर
शाहजहांपुर एवं
ANI

शुभारम्भ
योगी आदित्यनाथ
शुभारम्भ

फोटो फीचर

योगी आदित्यनाथ
निष्पक्ष एवम् पारदर्शी

योगी आदित्यनाथ
निष्पक्ष एवम् पारदर्शी

योगी आदित्यनाथ
निष्पक्ष एवम् पारदर्शी

शुभारम्भ
योगी आदित्यनाथ

बेसिक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने का अभिनव प्रयास : मिशन प्रेरणा

प्रदेश में बेसिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के अधिगम स्तर में गुणात्मक वृद्धि लाने के लिये वर्ष 2019 में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या 04 सितम्बर को प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय श्री योगी आदित्यनाथ ने मिशन प्रेरणा का शुभारम्भ किया था।

मिशन प्रेरणा एक ऐसा क्रान्तिकारी कार्यक्रम जिसके अन्तर्गत छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर को सुधारने के लिये बुनियादी अधिगम लक्ष्य (Foundation learning Goals) निर्धारित किये गये हैं।

बुनियादी अधिगम लक्ष्य इस प्रकार है :

बुनियादी अधिगम लक्ष्य (Foudation lerning Goals) कक्षा–1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिये भाषा तथा गणितीय कौशल के विकास हेतु अलग अलग लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं।

भाषा ज्ञान सम्बन्धी लक्ष्य

- कक्षा–1 : निर्धारित सूची में से 5 शब्द सही से पहचान लेते हैं।
- कक्षा–2 : अनुच्छेद को 20 शब्द प्रति मिनट के प्रवाह से पढ़ लेते हैं।
- कक्षा–3 : अनुच्छेद को 30 शब्द प्रति मिनट के प्रवाह से पढ़ लेते हैं।
- कक्षा–4 : छोटे अनुच्छेद को पढ़कर 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।
- कक्षा–5 : बड़े अनुच्छेद को पढ़कर 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।

गणितीय योग्यता सम्बन्धी लक्ष्य

- कक्षा–1 : निर्धारित सूची में से 5 संख्यायें सही से पहचान लेते हैं।
- कक्षा–2 : जोड़ एवं घटाना (एक अंकीय) के 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।
- कक्षा–3 : जोड़ एवं घटाना (हासिल के साथ) के 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।
- कक्षा–4 : गुणा के 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।
- कक्षा–5 : भाग के 75 प्रतिशत प्रश्नों को सही हल कर पाते हैं।

प्राथमिक विद्यालय के सभी छात्र–छात्राओं को ग्रेड कम्पिटेन्ट बनाने के लिये मार्च 2022 तक का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्रेरणा मिशन के अन्तर्गत फाउन्डेशन लर्निंग गोल्स की प्रगति के ऑकलन के लिये विशेष, मूल्याँकन प्रणाली लागू की गयी है।

इस मूल्यांकन प्रणाली के अन्तर्गत नियमित अंतराल पर ऑकलन के साथ–साथ छात्र–छात्राओं के मूल्यांकन के लिये परीक्षायें आयोजित की जा रही हैं। छात्र–छात्राओं के लर्निंग आउटकम के विषय वार अधिगम आँकलन हेतु प्रत्येक त्रैमास में स्कूल लेवेल असेसमेन्ट टेस्ट कराये जा रहे हैं। इस दिशा में कोरोना काल से पूर्व 8 नवम्बर, 2019 और 19 फरवरी, 2020 को प्राथमिक विद्यालयों के लर्निंग आउटकम के मूल्यांकन हेतु परीक्षायें आयोजित करायी गयी थीं।

परीक्षा परिणाम के आधार पर विकास खण्डवार लर्निंग आउट कम की विद्यालयवार समीक्षा की गयी है। समीक्षा के आधार पर छात्र–छात्राओं को A, B, C, D, E ग्रेड में बांटकर सी.डी. और ई. ग्रेड के छात्र छात्राओं के लिये रिमीडियल टीचिंग की कार्यवाही सम्पन्न की गयी। लर्निंग आउटकम परीक्षा परिणामों के आधार पर Student Report card और स्कूल रिपोर्ट कार्ड तैयार की गयी है। Student Report card बच्चों को तथा स्कूल रिपोर्ट कार्ड प्रधानाध्यापकों को उपलब्ध करायी गयी है।

फाउन्डेशन लर्निंग गोल को त्रैमासिक लक्ष्य के रूप में विभाजित करते हुये प्रेरणा तालिका पर अंकित किया जाता है। इसे सम्बन्धित विद्यालय की कक्षा में चस्पाकर नियमित रूप से प्रगति भरी जा रही है। जिसका प्रधानाध्यापक और एकेडेमिक रिसोर्स परसन द्वारा प्रमाणीकरण भी किया जाता है।

फाउन्डेशन लर्निंग गोल्स का विकास खण्डवार स्वतन्त्र मूल्यांकन किया गया है। मूल्यांकन के बाद यदि बच्चों ने निर्धारित गोल्स प्राप्त कर लिये हैं तो उसे प्रेरक विकास खण्ड, यदि जनपद के सभी विकास खण्ड प्रेरक विकास खण्ड का लक्ष्य हासिल कर लेते हैं तो उसे प्रेरक जनपद और मण्डल के सभी जनपद जब लक्ष्य प्राप्त कर लेगें तो प्रेरक मण्डल और राज्य के समस्त जिले जब लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे तो प्रेरक प्रदेश का लक्ष्य प्राप्त होगा।

मिशन प्रेरणा का लक्ष्य प्राप्त करने के लिये अनेक सहयोगी कार्यक्रम भी चलाये जा रहें है :

(1) **शिक्षकों का नियमित सहयोग**– एकेडमिक रिसोर्स परसन एवं शिक्षक संकुल के द्वारा प्रत्येक शिक्षक का एकेडमिक अभिप्रेरण एवं क्षमतावर्धन किया जाता है।

(2) **बच्चों के सीखने–सिखाने में नये प्रयोग**– छात्र–छात्राओं को अब सिखाने के लिये पोस्टर, चार्ट, रीडिंग बुक, गणितीय किट के माध्यम से नया प्रयोग किया जा रहा है। इससे कक्षा में बच्चे आकर्षित हो रहे हैं।

(3) **छात्र–छात्राओं का रिपोर्ट कार्ड**– निजी क्षेत्र के विद्यालयों की तरह बेसिक शिक्षा विभाग के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं को मूल्यांकन के आधार पर रिपोर्ट कार्ड उपलब्ध करायी जा रही हैं। रिपोर्ट कार्ड के आधार पर अभिभावकों से उस पर चर्चा भी की जाती है।

(4) **शिक्षकों का क्षमतावर्धन**– विशेषज्ञों द्वारा विकसित शिक्षण सामग्री के माध्यम से शिक्षकों का ऑनलाइन निरन्तर प्रशिक्षण कराया जा रहा है।

(5) **पुस्तकालय स्थापना**– प्रत्येक विद्यालय में आवश्यकतानुसार रोचक पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय स्थापित किये गये हैं। ये सभी पुस्तकालय क्रियाशील भी हैं।

(6) **शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु सहयोगी हस्तपुस्तिकायें**– शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु आधारशिला, ध्यानाकर्षण और शिक्षण संग्रह नामक हस्तपुस्तिकायें तैयार कर शिक्षकों को उपलब्ध करायी गयी हैं। जिनकी सहायता से शिक्षक छात्र–छात्राओं को रोचक ढंग से शिक्षित कर सकेगें।

(7) **प्रेरणा तालिका का उपयोग**– नियमित अंतराल पर हर एक छात्र–छात्रा के सीखने के स्तर का आँकलन एवं अंकन के लिये प्रत्येक कक्षा में प्रेरणा तालिका की व्यवस्था की गयी है।

❖

उत्तर प्रदेश - प्रेरक प्रदेश

नेशनल अचीवमेंट सर्वे में जब से हुई समीक्षा।
प्रेरक प्रदेश बनाने की जाग्रत हुई है इच्छा।।
सिस्टम में परिवर्तन होगा अब सुधरेगी शिक्षा।
तीन देवियाँ प्रकट हुई हैं प्रेरणा, निष्ठा, दीक्षा।।
कमर कसो तैयार रहो देने को अग्नि परीक्षा।
मेहनत से पीछे न भागो आगे हरि की इच्छा।।
प्रेरणा, निष्ठा, दीक्षा संग मिलकर खूब पढ़ाओ।
तकनीकी का हुआ जमाना डिजिटल एप्स चलाओ।।
प्रेरणा से प्रेरित होकर शिक्षा की अलख जगाओ।
शिक्षण में हो कहीं समस्या दीक्षा शरण में जाओ।।
निष्ठावान शिक्षक बनकर अपना फर्ज निभाओ।
बच्चे यदि हों नामांकित शारदा मां को मनाओ।।
तीन देवियाँ प्रकट हुई हैं लेकर के डिजिटल अवतार।
निश्चित ही सुधरेगी शिक्षा अब होगा सपना साकार।।
ए.आर.पी. अजय कुमार कहते सबसे यही पुकार।
मिशन प्रेरणा सफल बनाकर थोड़ा सा करदो उपकार।।
सजग हो चुकी है सरकार, शिक्षा में कर रही सुधार।
समय के साथ भी खुद को बदलो तब ही होगा बेड़ापार।।

❖

अजय कुमार सोनकर
ए.आर.पी. इंग्लिश, राही–रायबरेली

मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला

हमारे देश में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में कोरोना महामारी एक बहुत बड़े संकट के रूप में आयी है जिसके चलते समस्त व्यवस्थायें पटरी से हट सी गयी है। प्रदेश के बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा इस संकट में विद्यालयों के बन्द होने के बावजूद बच्चों के शिक्षण पर विपरीत प्रभाव न पड़े इसके लिये **मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला का प्रथम चरण** सफलतापूर्वक संचालित किया गया है। जिसकी प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं :

(1) दीक्षा एप पर पाठ्यक्रम से मैप्ड क्यू आर (QR) कोड स्कैन्ड सामग्री उपलब्ध करायी गयी। इस सामग्री (Content) को 1.61 करोड़ बार देखा जा चुका है।

(2) शिक्षकों द्वारा बच्चों को 1.5 लाख व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से प्रत्येक दिन कक्षावार एवं विषयवार सामग्री उपलब्ध करायी गयी।

(3) दूरदर्शन के प्राइमरी चैनल डी.डी. उ.प्र. पर प्रत्येक दिन 9.00 बजे से अपराह्न 1.00 बजे तक कक्षावार शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित किये गये हैं। यह प्रसारण अब भी नियमित रूप से चल रहा है।

(4) मिशन प्रेरणा की बेबसाइट **www.prernaup.in** पर सभी कक्षाओं के लिये विषयवार सामग्री उपलब्ध करायी गयी है।

मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला–फेज–2

21 सितम्बर, 2020 से मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला के फेज–2 की शुरूआत की गयी है। फेज–2 के प्रमुख घटक निम्नवत् है।

(1) हर दिन की कार्य योजना से सम्बन्धित सामग्री एप पर उपलब्ध करायी जा रही है।

(2) मासिक पंचांग के अनुसार पाठ्यक्रम का विभाजन करके उसके अनुसार ई–कन्टेन्ट तैयार कराया जा रहा है।

(3) मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला फेज–2 में अभिभावक छात्र एवं शिक्षक का एक साथ समन्वय बनाकर ई–पाठशाला का संचालन किया जायेगा।

(4) शिक्षण में रोचक गतिविधियों का समावेश कराते हुये घर पर ही बनाये गये टी.एल.एम. से सब साथ मिलकर पढाई करेगें।

(5) बच्चों की पाठ्य पुस्तकें और कार्य पुस्तिकायें हर छात्र के घर तक पहुँचाई जायेंगी।

कोरोना काल में मिशन प्रेरणा की ई–पाठशाला फेज–1 से बच्चों के पठन पाठन को नियमित बनाये रखने का सफल प्रयास किया गया है। फेज–2 में इसे और अधिक सुदृढ़ एवं गुणवत्तापूर्वक सम्पन्न कराया जायेगा।

❖

विद्यालयों की बदलती तस्वीर

जनपद – बरेली

जून, 2018 में शुरू किये गये आपरेशन कायाकल्प ने प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय में परिवर्तन की एक नयी सुबह का श्री गणेश किया है। वे विद्यालय जो कभी टूटे–फूटे रंग रोगन रहित, खण्डहर से दिखते थे और अवारा पशुओं तथा असामाजिक तत्वों के शरण स्थली बने हुये थे। आपरेशन कायाकल्प के अर्न्तगत कराये गये कार्यों और सुविधाओं के कारण बरबस लोगों का ध्यान खींचने लगे हैं। वर्तमान में इस कार्यक्रम के तहत विद्यालयों में अतिरिक्त कक्ष,

स्वच्छ पेयजल, छात्र–छात्राओं और दिव्याँगों के लिये स्वच्छ शौचालय, हैण्डवाशिंग, यूनिट बनायी गयी है। परिसर व कक्षा में टाइल्स लगाकर उनका सौंदर्यीकरण किया गया है। विद्यालयों की रंगाई–पुताई कराकर छात्रों के लिये फर्नीचर, पुस्तकालय की सुविधा भी दी गयी है। विद्यालयों और उनकी

कक्षाओं में शिक्षापद्र पेटिंग दूर से बच्चों को आकर्षित करने के साथ–साथ उन्हें ज्ञान भी बांटती नजर आती हैं। इस अभिनव कार्यक्रम के अन्तर्गत रसोई कक्ष को भी उन्नत और साफ–सुथरा बनाया गया है। विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कर पर्यावरण सुधारने के भी प्रयास किये गये हैं।

जनपद बरेली में कुल प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय मिलाकर 2898 विद्यालय हैं। एक ही प्रांगण में स्थापित विद्यालयों का संविलियन करने के पश्चात अब विद्यालयों की संख्या 2485 है। कायाकल्प योजना के अन्तर्गत सभी विद्यालयों में कार्य कराये गये हैं और अधिकाँश विद्यालयों में कार्य पूर्ण भी हो चुके हैं। ऑपरेशन कायाकल्प योजना के अन्तर्गत निर्धारित 14 सुविधाओं के आधार पर विद्यालयों की रैंकिग की गयी। इस रैंकिग में फाइव स्टार

रैंकिग में वे विद्यालय आते हैं, जहां सभी सुविधायें उपलब्ध हैं। इस आधार पर जनपद बरेली में 77 ऐसे विद्यालय हैं, जो फाइव स्टार श्रेणी में आते हैं। फोर स्टार में कुल 358 विद्यालय हैं इसी प्रकार थ्री स्टार में 1072 विद्यालय, टू स्टार में 765 और वन स्टार में 626 विद्यालय हैं। वन या टू स्टार में अधिकांश वे विद्यालय आते हैं, जहां कार्य देर से शुरू हुआ लेकिन कार्य प्रगति पर है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री विनय कुमार ने बताया कि शीघ्र ही सभी विद्यालयों में कार्य पूर्ण करा लिया जायेगा।

ऑपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत होने वाले कार्यों के पूर्ण हो जाने के बाद इन विद्यालयों को डिजिटल तकनीक पर आधारित स्मार्ट क्लास युक्त बनाया जा रहा है। विद्यालयों में हुये इन परिवर्तनों से विद्यार्थियों और अभिभावकों के मन में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रति सकारात्मक

सोच का विकास हुआ है। छात्रों की नामांकन संख्या में वृद्धि हुई है। अध्यापक भी आत्मविश्वास के साथ शैक्षिक गुणवत्ता के प्रति प्रेरित हुये हैं, जो बुनियादी शिक्षा को नई दिशा दे रहे हैं।

❖

जनपद बरेली में ऑपरेशन कायाकल्प के अन्दर विद्यालयों की बदलती तस्वीर की झलक.....।

विद्यालयों की बदलती तस्वीर

(पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुड़ासपारा, विकास खण्ड फखरपुर, जनपद – बहराइच)

माननीय मुख्यमंत्री उ.प्र. श्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा जून, 2018 में शुरू किये गये आपरेशन कायाकल्प कार्यक्रम के परिणाम अब ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में दिखने लगे हैं। विद्यालयों की तस्वीर बदल रही है। ग्रामीणों में भी इस परिवर्तन का सकारात्मक प्रभाव दिखने लगा है। बेसिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों में बढ़ती छात्र

संख्या और शैक्षिक गुणवत्ता इसका सशक्त प्रमाण हैं। आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत निर्धारित कार्यों में 14 बिन्दुओं पर कार्य पूर्ण हो चुके हैं। निर्धारित मानकों के पूर्ण होने के आधार पर ही विद्यालयों को फाइव स्टार, फोर स्टार, थ्री स्टार, टू स्टार और वन स्टार की श्रेणी में बाँटा गया है। राज्य की राजधानी लखनऊ से बहराइच जाने वाली मुख्य सड़क से मात्र 03 किमी की दूरी पर स्थित पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुड़ासपारा विकास खण्ड फखरपुर जनपद बहराइच

में आता है। विद्यालय में इस समय लगभग 200 बच्चे पंजीकृत है। आपरेशन कायाकल्प की ग्रेडिंग के अन्तर्गत इस विद्यालय को फाइव स्टार श्रेणी दी गयी है। विद्यालय बाहर से देखने में किसी निजी विद्यालय का आभाष देता है। ग्रामीण बताते हैं कि तीन–चार वर्ष पूर्व विद्यालय की दशा बहुत दयनीय थी। छात्रों की संख्या भी बहुत कम थी। आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत ग्राम पंचायत द्वारा विद्यालय की मरम्मत कराकर

टाइल लगवाने के साथ ही रगांई–पुताई कराई गयी। विद्यालय में बच्चों के उपयोग के लिये साफ सुथरे शौचालय हैण्ड वाशिंग यूनिट, दिव्यांगों के लिये समस्त सुविधायें, कक्षाओं में फर्नीचर की व्यवस्था, दीवारों पर स्वतः ज्ञान बाँटती पेटिंग, कम्प्यूटर एवं प्रोजेक्टर युक्त स्मार्ट क्लास जैसी सुविधायें उपलब्ध हैं। विद्यालय में कूड़ा कचरा के निस्तारण के लिये अलग से चिमनी युक्त इन्सिनेटर संरचना बनायी गयी

है। विद्यालय में विद्युत कनेक्शन है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण नियमित आपूर्ति बनी रहे इसके लिये सोलर पैनल भी लगाया गया है।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुड़ासपारा में वर्तमान में प्रधानाध्यापिका सुश्री मालती विश्वकर्मा सहित सहायक

अध्यापक मोहम्मद विलाल अंसारी और श्री इमरान खान कार्यरत हैं। इनकी सहायता के लिये एक अनुदेशक भी है। विद्यालय में शैक्षिक गुणवत्ता और खेलकूद पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विद्यालय की कबड्डी टीम मंडल स्तर पर पुरस्कृत भी हो चुकी हैं।

कोरोना काल में छात्र–छात्रओं को वाट्सएप ग्रुप, यू ट्यूब, आकाशवाणी व दूरदर्शन के कार्यक्रमों से पढ़ने के लिये

प्रेरित किया जाता है साथ ही उन्हें मोबाइल फोन के माध्यम ग्रह कार्य देकर उसे पूर्ण कराया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में हो रहे इन परिवर्तनों से भविष्य के सुन्दर सपनों का सृजन हो रहा है।

❖

नई शिक्षा नीति :

संपोषणीय बदलाव के साथ समावेशी और आधुनिक ज्ञान आधारित समाज के निर्माण का प्रयास

नई शिक्षा नीति ''आत्म निर्भर भारत'' के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक ठोस कदम हैं। इसमें शिक्षा व्यवस्था की वर्तमान खामियों को दूर करने के प्रावधान हैं तो 21वीं सदी के बदलते हुये भारत की आन्तरिक वैश्विक चुनौतियों का सामना करने की तैयारी भी है।

नई शिक्षा नीति ने 34 वर्ष पुरानी शिक्षा नीति का स्थान लिया है। इस नई शिक्षा नीति में स्कूल शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई बड़े बदलाव किये गये हैं। इस शिक्षा नीति में समाज और राष्ट्र के समक्ष जो प्रत्यक्ष चुनौतियाँ हैं। उनका समाधान ढूँढ़ने का प्रयास किया गया है। विश्व पटल पर देश एक आर्थिक शक्ति बनकर उभरे और हर नौजवान को रोजगार मिल सके इसका खास ख्याल रखा गया है। नई शिक्षा नीति में स्कूल शिक्षा, मध्य स्तर और डिग्री शिक्षा के सुधार के लिये विशेष ध्यान दिया गया है, साथ ही तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, आर्थिक प्रबन्धन और अनुसंधान के लिये विशेष प्रबन्ध किये जाने का संकल्प दिखायी देता है। नयी शिक्षा नीति भरतीयता पर आधारित नीति है, जो देश में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध कराकर संपोषणीय बदलाव के साथ समावेशी और आधुनिक ज्ञान आधारित समाज का निर्माण करेगी। नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की जरूरत है। इसमें छात्रों के कंधों का बोझ कम करते हुये उनके भीतर इमेजिनेशन, क्रियेटिव थिंकिंग, पैशन और शैक्षिक दर्शन का प्रादुर्भाव होगा। नई शिक्षा नीति में प्रमुख रूप से क्रियेटिविटी क्यूरियासिटी और कमिटमेन्ट पर ध्यान दिया गया है। नये भारत से दुनिया को बहुत अपेक्षायें हैं। नई शिक्षा नीति से देश सामर्थवान बनकर दुनिया के समक्ष टेलेन्ट और टेक्नालाजी

का समाधान प्रस्तुत करेगा। नई शिक्षा नीति का स्वरूप जड़ से जग तक, मनुष्य से मानवता तक अतीत से आधुनिकता तक सभी बिन्दुओं का समावेश करते हुयी तय की गयी है। नई नीति में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है। अब प्रारम्भिक शिक्षा में बच्चों की घर की बोली और स्कूल में सीखने की भाषा एक ही होगी।

नई शिक्षा नीति में देश के होनहार विद्यार्थियों को जो पुस्तकीय ज्ञान होने के बाद भी व्यावहारिक पहलुओं के अभाव में वैश्विक प्रतिस्पर्धा में थोड़े पीछे दिखते थे उन्हें ज्ञान और व्यवहार में सामंजस्य बिठाने का अवसर मिलेगा। नई शिक्षा नीति मैकाले की शिक्षा प्रणाली को पूर्णतया समाप्त करेगी, जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सकेगा। यह प्रणाली देश में आत्मनिर्भरता की नींव तैयार करेगी। नई शिक्षा नीति नये भारत की परिकल्पना है।

नई शिक्षा नीति एक ऐतिहासिक, साहसिक और परिवर्तनकारी कदम है, जो देश के भविष्य को विश्वस्तरीय आकांक्षाओं के अनुरूप तैयार करेगी। नई शिक्षा नीति की कुछ मुख्य विशेषतायें इस प्रकार हैं:–

- 03 वर्ष से 06 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को वर्ष 2025 तक प्री–प्राइमरी स्तर की गुणवत्ता पूर्ण बुनियादी साक्षरता और अंकों की समझ तक की शिक्षा अनिवार्य होगी।
- अब नयी शिक्षा नीति में पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचा 5+3+3+4 होगा, जो देश के सभी 03 वर्ष के बच्चों से लेकर 18 वर्ष तक युवाओं को आच्छादित करेगा। इस

नीति में प्री–प्राइमरी और ग्रेड 1–2 शिक्षा का बुनियादी स्तर माना जायेगा अर्थात् 03 वर्ष 06 वर्ष तक के बच्चों को प्री–प्राइमरी तथा कक्षा–1 व 2 स्तर की पढ़ाई ऑगनबाड़ी के माध्यम से प्राप्त होगी। ग्रेड 3–5 प्रेपटरी स्टेज (प्राथमिक स्तर) 6–8 मध्य स्तर और 9–12 सेकन्डरी स्तर होगा। इस शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य देश के प्रत्येक बच्चे को समान और समावेशी शिक्षा प्रदान करना है। इसमें वंचित समुदायों का विशेष ध्यान रखा जायेगा। वर्ष 2030 तक 18 वर्ष के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा दी जायेगी।

नई शिक्षा नीति में एक और महत्वपूर्ण अनुशंसा की गयी है कि कम से कम पांचवी कक्षा तक की पढ़ाई मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा में हो। मातृभाषा में अध्ययन संज्ञान और सम्प्रेषण को सहज और शीघ्र बनाता है, जो बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के लिये आवश्यक है। इसी के साथ बच्चों को तीन क्षेत्रीय भाषाओं का ज्ञान एवं अध्ययन करना होगा। बच्चे 2–8 वर्ष की उम्र के मध्य मातृ भाषा में बड़ी तेजी से सीखते हैं। त्रिभाषा सूत्र में बच्चों को संज्ञानात्मक लाभ होगा। इसमें बच्चों को मातृभाषा के साथ–साथ अन्य शास्त्रीय भाषायें जैसे–तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, पाली, फारसी और प्राकृत भी सिखाना प्रस्तावित है।

देश में एक नयी स्वतंत्र राज्य स्कूल रेगुलेटरी अथॉरिटी (SSRA) का गठन किया जायेगा, जिसका उद्देश्य देश के 800 विश्वविद्यालयों 40,000 कालेज और लगभग 15000 बहुविषयक संस्थानों को मजबूती प्रदान करना होगा।

नई शिक्षा नीति में उच्च शिक्षण संस्थानों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जायेगा। 1. शोध आधारित विश्वविद्यालय 2. शिक्षा प्रदान करने वाले विश्वविद्यालय और 3. स्वतंत्र रूप से डिग्री प्रदान करने वाले कालेज। इसका उद्देश्य उच्च शैक्षणिक संस्थानों को स्वनिर्णय (Autonomy) का अधिकार देना है। उच्च शिक्षा संस्थान आत्म निर्भर बोर्ड द्वारा पूर्ण शैक्षिक एवं प्रशासनिक स्वनिर्णय से संचालित होंगे।

संसद द्वारा पारित एक्ट के द्वारा नेशनल रिसर्च फाउन्डेशन (NRF) का गठन किया जायेगा, जो देश के सभी संस्थानों को वित्तीय एवं अन्य सहायता प्रदान करेगा। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग या नेशनल एजूकेशन कमीशन जैसी सर्वोच्च संस्था का गठन किया जायेगा, जिसमें जाने–माने शिक्षाविद, शोधार्थी, केन्द्रीय मंत्री, राज्यों के मुख्यमंत्री या उनके प्रतिनिधि, विभिन्न क्षेत्रों के मशहूर प्रोफेशनल शामिल होंगे। नयी शिक्षा नीति में मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम अब शिक्षा मंत्रालय होगा।

नई शिक्षा नीति वर्तमान चुनौतियों के समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। आज की स्कूल शिक्षा में ज्यादा जोर शैक्षणिक पाठ्यक्रम पर है, जबकि नई शिक्षा नीति पाठ्येत्तर क्रियाकलापों और वोकेशनल शिक्षा पर आधारित होगी। गांधीजी के श्रम सिद्धांत के अनुसार अब छठी क्लास से ही वोकेशनल कोर्स शुरू किये जायेंगे। इस नीति के अनुसार विद्यालयों में वोकेशनल शिक्षा के आधुनिकतम कोर्सेज के साथ–साथ स्थानीय भारतीय लोक कलायें भी कालेज में उपलब्ध होगी। वोकेशनल शिक्षा युवाओं को स्वरोजगार, स्वव्यवसाय और स्वउद्यम के अनेक अवसर उपलब्ध करायेगी, जिससे बेरोजगारी की समस्या पर लगाम लगायी जा सकेगी।

विद्यालयी शिक्षा में नई नीति के अनुसार एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है। विद्यालयी शिक्षा में अब स्ट्रीम के बंटवारे में ज्यादा लचीलापन होगा। इस मॉडल में विज्ञान अथवा कामर्स का विद्यार्थी अब मानविकी के विषय भी पढ़ सकेगा।

नई शिक्षा नीति में ग्रेजुएशन डिग्री समेत उच्च शिक्षा

स्तर में बड़े बदलाव प्रस्तावित किये गये हैं। ग्रेजुएशन की डिग्री अब 4 साला होगी, जो मल्टीपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम पर आधारित होगी। अभी तक ग्रेजुएशन में यदि कोई विद्यार्थी एक वर्ष या दो वर्ष की पढ़ाई करने के बाद किसी कारण से अध्ययन बीच में छोड़ देता था तो उसके दो साल बेकार चले जाते थे। नई नीति में अब पढ़ाई बीच में छूटने पर वह बेकार नहीं होगी। एक साल की पढ़ाई पूरी होने पर सर्टीफिकेट दिया जायेगा। 3 वर्ष बाद उन छात्रों को डिग्री मिल जायेगी, जिन्हें शोध में नहीं जाना है और न ही उच्च शिक्षा ग्रहण करना है। शोध में जाने वाले छात्रों को चार साल की डिग्री पूरी करनी होगी। चार वर्ष की डिग्री पूर्ण करने वाले छात्र मात्र एक वर्ष में एम.ए. कर सकेंगे। नई शिक्षा नीति में इन्जीनियरिंग के छात्रों को बड़ी सहूलियत होगी। यदि वे इन्जीनियरिंग की पढ़ाई 2 साल बाद किसी काराण से छोड़ देते हैं तो उन्हें डिप्लोमा प्रदान कर दिया जायेगा। इस नीति में पांच वर्ष का संयुक्त ग्रेजुएट मास्टर कोर्स लाया जायेगा। एम.फिल. को इस नीति में खत्म कर दिया जायेगा।

शिक्षकों के उन्नयन के लिये राष्ट्रीय मेन्टरिंग प्लान लागू किया जायेगा। स्कूल और सेकन्डरी एजूकेशन की गुणवत्ता बढ़ाने और योग्य अध्यापक तैयार करने के लिये चार वर्षीय बी.एड. डिग्री 2030 से शिक्षक बनने की न्यूनतम योग्यता होगी। शिक्षकों की भर्ती प्रभावकारी एवं पारदर्शी प्रक्रियाओं से की जायेगी। शिक्षकों की पदोन्नति योग्यता आधारित होगी। समय–समय पर उनके कार्यों का मूल्यांकन भी किया जायेगा।

नई शिक्षा नीति में बोर्ड परीक्षाओं का तनाव कम होगा। सेकेन्डरी स्तर की परीक्षाओं को आसान बनाया जायेगा। इस नीति में कालेजों को कामन एक्जाम का विकल्प होगा, लेकिन यह अनिवार्य नहीं होगा। इसी प्रकार स्कूल और कालेजों की फीस पर नियंत्रण के लिये तंत्र बनाया जायेगा। स्कूलों में बच्चों की रिपोर्ट कार्ड परफारमेन्स आधारित होगी। विदेशी विश्वविद्यालयों को भी देश में अपने कैम्पस खोलने की अनुमति होगी। छात्र अब देश में रहते हुये विश्व के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में प्रवेश ले सकेंगे।

नई शिक्षा नीति सही समय पर सही कदम है। यह 21वीं सदी के भारत में गांधी जी के रामराज्य के सपने को साकार करेगी। सी.बी.एस.ई. के पूर्व चेयरमैन अशोक गांगुली का कहना है कि ''नेशनल एजूकेशन पालिसी बहुत सारे बदलाव लाई है और इन्हें लागू करने के लिये टीचर्स को माइंडसेट और स्किलसेट दोनों पर ही काम करना होगा। शिक्षाविदों का मानना है कि नई शिक्षा नीति में सभी की अपेक्षाओं को पूरा करने की क्षमता है, लेकिन सबसे बड़ी चुनौती अब क्रियान्वयन की है।

❖

नई शिक्षा नीति और बेसिक शिक्षा

नयी शिक्षा नीति में बेसिक शिक्षा के लिये दिये गये सुझाव	सुझाव के अनुरूप उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा विभाग की कार्ययोजना
• वर्ष 2030 तक प्री–प्राइमरी शिक्षा से सेकेण्डरी स्तर की शिक्षा तक सर्व पहुँच स्थापित करना।	• बेसिक शिक्षा एवं आई.सी.डी.एस. के मध्य समन्वय स्थापित करते हुए प्री–प्राइमरी के बच्चों की उच्च प्राथमिक स्तर तक शिक्षा के सार्वभौमीकरण की कार्ययोजना तैयार।
• राष्ट्रीय मिशन 2025 के अन्तर्गत बुनियादी ज्ञान एवं अंकगणितीय कौशल स्तर प्राप्त करना।	• मा. मुख्यमंत्री जी द्वारा सितम्बर, 2019 में ''मिशन प्रेरणा'' का लोकार्पण किया गया, जिसके अर्न्तगत वर्ष 2022 तक समस्त छात्रों के एफ.एल.एन. स्किल प्राप्त किये जाने पर विशेष ध्यान।
• वर्ष 2030 तक प्री–प्राइमरी से माध्यमिक स्तर तक शत–प्रतिशत जी.ई.आर. प्राप्त करना।	• प्री–प्राइमरी से उच्च प्राइमरी तक शत–प्रतिशत जी.ई. आर. प्राप्त।
• 02 करोड़ आउट ऑफ स्कूल बच्चों को पुनः विद्यालयों में दाखिल कराना।	• शारदा कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2019–20 में 20 लाख से अधिक आउट ऑफ स्कूल बच्चों को पुनः विद्यालय में नामांकित कराया गया।
• वर्ष 2023 तक मूल्याँकन सम्बन्धी सुधारों के लिए शिक्षकों को तैयार किया जाना।	• एस.ए.टी. (सैट) सिस्टम के अन्तर्गत माह नवम्बर, 2019 से ही शिक्षकों द्वारा मूल्याँकन सुधारों का अभ्यास किया जा रहा है।
• वर्ष 2030 तक समावेशी शिक्षा की अवधारणा को सम्मिलित किया जाना।	• समर्थ एवं शारदा कार्यक्रम के माध्यम से समावेशी एवं सर्वसुलभ शिक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।
• समस्त शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अधिगम के समान मानक निर्धारित करना।	• मिशन प्रेरणा का मुख्य उद्देश्य शासकीय विद्यालयों के शिक्षण स्तर को उच्चीकृत कर निजी विद्यालयों के समकक्ष लाना है।
• शैक्षिक नियोजन	• प्रेरणा तकनीकी फ्रेमवर्क के माध्यम से तकनीक आधारित नियोजन एवं अनुश्रवण पर विशेष बल।
• शिक्षण, अधिगम एवं मूल्याँकन	• मिशन प्रेरणा के अर्न्तगत मूल्यांकन की व्यवस्था।
• प्रशासन एवं प्रबन्धन, नियमितता–स्वयं उत्तरदायित्व निर्धारण तथा न्यूनतम् मानवीय हस्तक्षेप।	• 18 पैरामीटर्स पर अवस्थापना सुविधाओं का डाटा प्राप्त करना। विकासखण्ड एवं विद्यालय स्तर पर विकास की योजना।
• वंचित वर्ग तक सुविधाओं की पहुँच में वृद्धि किया जाना। दिव्याँग बच्चों हेतु आसान एवं सुलभ सॉफ्टवेयर।	• मोबाइल ऐप आधारित सपोर्टिव सुपरविजन। प्रत्येक छात्र के अधिगम स्तर का डाटा संकलित करना। शारदा एवं समर्थ पोर्टल के माध्यम से आउट ऑफ स्कूल एवं दिव्यांग बच्चों की ट्रेकिंग एवं अधिगम स्तर में सुधार कर उन्हें मुख्य धारा से जोड़ना।

• क्षेत्रीय भाषाओं में ई–कन्टेन्ट की उपलब्धता तथा वर्चुअल प्रयोगशालायें।	• दीक्षा ऐप में शैक्षणिक सामग्री के लगभग 5000 वीडियोज़ उपलब्ध कराना।
• समस्त विद्यालयों, शिक्षकों एवं छात्रों को डिजिटल उपकरणों से समृद्ध करना।	• वर्ष 2021 तक सभी विद्यालयों में स्मार्ट टी.वी. एवं टैबलेट उपलब्ध कराकर उन्हें डिजिटली समर्थ बनाने की योजना।
• सभी बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराना।	• बेसिक शिक्षा में सुधारात्मक प्रयास हेतु मा. मुख्यमंत्री जी द्वारा 04 सितम्बर, 2019 को ''मिशन प्रेरणा'' का शुभारम्भ किया गया जिसका उद्देश्य सभी को गुणवत्ता युक्त प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराना है।
• 03 से 06 वर्ष के बच्चों के लिए प्रारम्भिक कक्षा/बाल वाटिका की स्थापना।	• बेसिक शिक्षा विभाग एवं आई.सी.डी.एस. के मध्य समन्वय स्थापित कर 5+3+3 मॉडल पर पूर्व से ही कार्य किया जा रहा है।
• बुनियादी साक्षरता एवं गणितीय ज्ञान हेतु राष्ट्रीय मिशन।	• प्राथमिक विद्यालयों में प्रिंटरिच सामग्री, गणित किट, रीडिंग बुक, लाइब्रेरी पर पहले से ही विशेष ध्यान दिया जा रहा है।
• 5+3+3+4 पाठ्यक्रम एवं शिक्षण ढ़ाचा (आँगनवाड़ी– 03 वर्ष + एवं कक्षा 1 एवं 2 के 02 वर्ष + कक्षा 3–5 के 03 वर्ष + कक्षा 6–8 के 03 वर्ष + कक्षा 9–12 के 04 वर्ष)।	• आई.सी.डी.एस. विभाग से समन्वय स्थापित कर 1.15 लाख से अधिक आंगनबाड़ी केन्द्रों हेतु एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्री–प्राइमरी पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। आंगनबाड़ी केन्द्रों में 03 से 06 वर्ष के बच्चों के लिए 'पहल' एक्विटी बुक का वितरण किया गया है।
• लैंगिक समानता पर विशेष ध्यान। के.जी.बी.वी. में कक्षा 12 तक की शिक्षा।	• उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा समस्त 746 के.जी.बी.वी. को 12वीं कक्षा तक की शिक्षा के लिए उच्चीकृत करने का निर्णय लिया है। मा. मुख्यमंत्री जी द्वारा 04 मार्च, 2020 को 350 के.जी.बी.वी. को उच्चीकृत किया जा चुका है।
• पाठ्यक्रम का बोझ कम किया जाना।	• उत्तर प्रदेश सरकार ने शैक्षिक सत्र 2021–22 से कक्षा 1 से एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम को लागू करने का निर्णय लिया है। भविष्य में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पाठ्यक्रम में किये जाने वाले बदलाव को भी अंगीकृत किया जायेगा।
• कक्षा–6 से व्यवसायिक शिक्षण।	• शारदा कार्यक्रम के अन्तर्गत आउट ऑफ स्कूल बच्चों हेतु कौशल विकास मिशन से साझेदारी कर पूर्व से ही व्यवसायिक कौशल प्रशिक्षण की व्यवस्था है। शीघ्र ही सभी विद्यालयों में भी व्यवस्था किया जाना है।
• प्रारम्भिक शिक्षा, विद्यालयों, शिक्षकों एवं प्रौढ़ शिक्षा हेतु नया राष्ट्रीय पाठ्यक्रम।	• नवीन शिक्षा प्रणाली पर भारत सरकार से विस्तृत निर्देश प्राप्त होते ही प्रदेश सरकार द्वारा उसे अंगीकृत किया जायेगा।

• कक्षा 10 एवं 12 की बोर्ड परीक्षाओं के अतिरिक्त कक्षा 3, 5 एवं 8 में भी परीक्षायें आयोजित किया जाना।	• बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा मिशन प्रेरणा के अर्न्तण प्रत्येक कक्षा में त्रैमासिक परीक्षायें कराई जा रही हैं। 01 करोड़ से अधिक छात्रों का 40 लर्निंग आउटकम्स पर आधारित एचीवमेंट डाटा उपलब्ध है।
• कक्षा 5 तक तथा विशेष प्राथमिकता पर कक्षा 8 एवं उसके उपरान्त अध्यापन एवं अध्ययन कार्य में स्थानीय भाषा / मातृ भाषा / क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग।	• समस्त प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य हिन्दी में ही किया जा रहा है। स्थानीय भाषाओं (अवधी, बुन्देली आदि) में पाठ्य पुस्तकों की भी व्यवस्था।
• बच्चों के सर्वांगीण विकास पर आधारित रिपोर्ट कार्ड, अधिगम स्तर की प्राप्ति हेतु छात्र प्रगति की नियमित ट्रेकिंग तथा सतत् मूल्यांकन हेतु छात्रों की रैण्डम सैम्पलिंग।	• छात्र मूल्यांकन परीक्षा (सैट–2) के परफॉरमेन्स पर आधारित छात्र रिपोर्ट कार्ड समस्त छात्रों को प्रेषित किये जा चुके हैं।
• जन समुदाय के प्रति उत्तरदायी एवं पारदर्शी ऑनलाइन व्यवस्था।	• रैण्डम आधार पर चिन्हित विद्यार्थियों का थर्ड पार्टी द्वारा मूल्यांकन। प्रेरणा तकनीकी फ्रेमवर्क द्वारा विद्यालयों से रियल टाइम डाटा (अवस्थापना सुविधायें, लर्निंग आउटकम्स, क्लासरूम प्रेक्टिसेज़ आदि पर आधारित) कैप्चर किये जाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।
• अध्यापकों हेतु नेशनल प्रोफेशनल स्टैण्डर्ड (एन.पी.एस.टी.) तैयार करना।	• भारत सरकार द्वारा एन.पी.एस.टी. के मानक अधिसूचित किये जाने के उपरान्त उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अंगीकृत किये जायेंगे।
• बुक प्रमोशन पॉलिसी एवं डिजिटल पुस्तकालयों की व्यवस्था।	• समस्त प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालयों की व्यवस्था की जा रही है, 20 करोड़ पुस्तकों हेतु एन.सी.ई.आर.टी. को वर्क ऑर्डर निर्गत। वर्ष 2020 में समस्त विद्यालयों में पुस्तकालय स्थापित किये जायेंगे। विभाग की वेबसाइट **www.prernaup.in** पर डिजिटल पुस्तकालय भी उपलब्ध है।
• अध्यापकों का चयन टी.ई.टी., एन.टी.ए. टेस्ट एवं शैक्षिक प्रदर्शन के आधार पर किया जायेगा।	• उत्तर प्रदेश में गत वर्षों में टी.ई.टी. आधारित चयन की प्रक्रिया लागू की गयी है, परिषदीय विद्यालयों में केवल टी.ई.टी. पात्रता प्राप्त शिक्षकों की ही तैनाती हो रही है।
• कक्षा 12 तक के शिक्षकों हेतु टी.ई.टी. अनिवार्य।	• भारत सरकार की अधिसूचना के अनुसार योजना कार्यान्वित की जायेगी।
• शिक्षकों के अधिगम, मूल्यांकन, प्रोफेशनल डेवलपमेंट, शैक्षिक नियोजन एवं उपस्थिति आदि हेतु आई.सी.टी. के प्रयोग में वृद्धि की जायेगी।	• नयी शिक्षा नीति के अनुरूप शिक्षकों के अधिगम मूल्यांकन प्रोफेशनल डेवलपमेंट और शैक्षिक नियोजन पर कार्य योजना प्रस्तावित की जायेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक

श्री अखिलेश कुमार मौर्य
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय–बैराखास
विकास खण्ड–औराई
जनपद–भदोही

पुरस्कार – रजत पदक
सिंगापुर मास्टर ट्रैक एण्ड फील्ड चैम्पियनशिप – 2019 : गोला फेंक में रजत पदक

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय में अध्यापन के साथ–साथ खेलों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धि हासिल कर श्री अखिलेश कुमार मौर्य ने बेसिक शिक्षा विभाग का मस्तक ऊँचा करने के साथ ही देश का गौरव बढ़ाया है।

श्री अखिलेश कुमार मौर्य को बचपन से खेलों में काफी रूचि थी। अध्यापक बनने के बाद भी खेलों में बराबर हिस्सा लेते रहे। एथेलेटिक्स की गोला फेंक प्रतियोगिता में हिस्सा लेते हुये राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर भी आपने कई प्रतियोगिता अपने नाम की हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार उन्हें वर्ष 2019 में ट्रैक एण्ड फील्ड चैम्पियनशिप में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। दिनांक 06, 07 और 08 जुलाई, 2019 को सिंगापुर के ''होम ऑफ एथलीट'' नामक स्टेडियम में आयोजित सिंगापुर मास्टर्स ट्रैक एण्ड फील्ड चैम्पियनशिप में भारत की ओर से 42 खिलाड़ियों में श्री अखिलेश कुमार मौर्य को भाग लेने का मौका मिला। इस आयोजन में गोला फेंक प्रतियोगता में रजत पदक प्राप्त कर श्री मौर्य पहले ऐसे अध्यापक बने जिन्होंने विभाग और देश को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरान्वित किया।

श्री अखिलेश कुमार मौर्य स्वयं की उपलब्धि के साथ–साथ अपने विद्यालय में शैक्षणिक एवं खेलकूद गतिविधियों को बढ़ावा देने में प्रयासरत रहते हैं। विद्यालय के बच्चों को खेल–कूद की गतिविधियों का प्रशिक्षण देकर उन्हें विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिये तैयारी कराते रहते हैं। आपके प्रयास से विद्यालय कई बच्चे दौड़, खोखो तथा एथेलेटिक्स के अन्य खेलों में मंडल एवं राज्य स्तर पर स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त कर चुके हैं।

श्री अखिलेश कुमार मौर्य का कहना है कि जब मैंने उच्च प्राथमिक विद्यालय बैराखास में सहायक अध्यापक के रूप में योगदान किया था उस समय विद्यालय में कुल 127 छात्रों का नामांकन था। स्कूल में छात्रों की उपस्थिति भी बहुत कम रहती थी। मैंने इस समस्या से निपटने के लिये एक नई शुरूआत की। मैं स्कूल समय से आधा घंटे पहले स्कूल पहुंचने लगा। जो बच्चे उस समय आ जाते उनको लेकर बागवानी और खेलकूद का कार्यक्रम शुरू किया। इस कार्यक्रम से बच्चों और अभिभावकों में रूचि बढ़ने लगी। उनकी उपस्थित ठीक होने लगी। निश्चित समय पर स्कूल में प्रार्थना कराता जिसमें हारमोनियम तथा साउन्ड सिस्टम की मदद से बच्चों की प्रस्तुति भी करायी जाती थी। विद्यालय की कक्षाओं में पठन–पाठन पर भी खूब जोर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि अगले वर्ष विद्यालय में छात्रों का नामांकन लगभग 170 हो गया है। हमारे विद्यालय की प्रगति से अभिभावक भी प्रसन्न हैं।

❖

राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक

डा. सर्वेष्ट कुमार मिश्र
प्रधानाध्यापक,
आदर्श प्राथमिक विद्यालय,
मूड़घाट, जनपद–बस्ती

पुरस्कार
राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान–2018
राज्य स्तरीय आई.सी.टी. अवार्ड

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से डॉ. सर्वेष्ट कुमार मिश्र की मुलाकात के क्षण

डा. सर्वेष्ट कुमार मिश्र, उत्तर प्रदेश के सबसे कम उम्र में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षक हैं। इनके द्वारा जनसहयोग व व्यक्तिगत प्रसास से विकसित हैप्पी स्मार्ट स्कूल, आदर्श प्राथमिक विद्यालय, मूड़घाट जनपद–बस्ती शिक्षकों के बीच नज़ीर बन चुका है। इस विद्यालय को डा. सर्वेष्ट मिश्र ने अल्प समय में भौतिक संसाधनों से युक्त कर नामांकन में आशातीत वृद्धि की। इन्होंने अपने प्रयासों से अपने विद्यालय में प्रदेश के पहले ऑनलाइन स्मार्ट क्लास, विद्यालय की वेबसाइट, 8 सीसीटीवी कैमरों की स्थापना, बायोमेट्रिक उपस्थिति सुविधा स्थापित कर समूचे प्रदेश में एक मिशाल पेश की। श्री सर्वेष्ट कुमार को भारत सरकार ने उनके उल्लेखनीय कार्य के लिये देश के सर्वोच्च शिक्षक सम्मान राष्ट्रपति सम्मान 2017 से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश से एक मात्र शिक्षक श्री सर्वेष्ट कुमार मिश्र को शिक्षक दिवस पर 05 सितम्बर, 2018 को देश के उपराष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडू जी ने यह सम्मान प्रदान किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उन्हें अपने प्रधानमंत्री आवास पर आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित किया और उनके कार्यों को अपने ट्विटर एकाउंट पर साझा किया। एक शिक्षक के रूप में उनका चयन विशिष्ट बीटीसी 2004 में हुआ था। 19 जुलाई, 2016 को उनकी तैनाती उस समय के दयनीय व जर्जर प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट को माडल विद्यालय के रूप में विकसित करने हेतु प्रधानाध्यापक के पद कर दी गयी। जहां जिम्मेदारीपूर्वक उन्होंने अपने कर्तव्यों के निर्वहन करते हुये उसे एक वर्ष में ही आदर्श प्राथमिक विद्यालय के रूप में परिवर्तित कर दिया। व्यक्तिगत धन व जनसहयोग से उन्होंने उक्त विद्यालय को जनपद–बस्ती के पहले स्मार्ट कक्षा सुविधायुक्त परिषदीय प्राथमिक विद्यालय के रूप में पहचान दी। 05 सितम्बर, 2018 व 04 सितम्बर, 2019 को शिक्षक दिवस समारोह में माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने उनके कार्यों की सराहना की। मिशन प्रेरणा के अन्तर्गत विकसित माड्यूल लेखन में योगदान हेतु बेसिक शिक्षा मंत्री डा. सतीश चन्द्र द्विवेदी द्वारा श्री सर्वेष्ट कुमार मिश्र को एजूकेशन कान्क्लेव में सम्मानित किया गया। इसके आलावा उन्हें 100 से अधिक सम्मान विविध संस्थाओं व व्यक्तियों द्वारा प्रदान किये गये।

वर्तमान में वह अपने विद्यालय में आईसीटी संसाधनों से बच्चों को शिक्षण के अलावा पाठ्यसामग्री गतिविधियों द्वारा गुणवत्तापरक शिक्षा व संस्कार देकर जिम्मेदार नागरिक बनाने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने अपने स्कूल को कम्प्यूटर और प्रोजेक्टर जैसे विभिन्न इलेक्ट्रानिक संसाधनों (आईसीटी) और शिक्षक नवाचारों का प्रयोग कर जनपद का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय होने का गौरव दिलाया है। उनके प्रयासों और नवाचारों का असर है कि जुलाई 2016 में जब इस विद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया तो उस समय 38 नामांकन के सापेक्ष मात्र 19 बच्चे ही मिले थे। उनके प्रयासों से एक साल भीतर ही छात्र संख्या बढ़कर 211 हो गया और वर्तमान में 255 हैं।

श्री सर्वेष्ट मिश्र के प्रयास से परिवर्तित उनके विद्यालय में उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा मंत्री श्री सतीश चन्द्र द्विवेदी, शिक्षा निदेशक डा. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह सहित जनपद के विशिष्टि व्यक्तियों व संस्थाओं ने भ्रमण कर उनके प्रयासों को सराहा है।

राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक

श्री यतीश कुमार (इ.स.अ.)
पूर्व माध्यमिक विद्यालय, कारेका सदूपुरा
विकास खण्ड–इगलास,
जनपद–अलीगढ़

पुरस्कार
राज्य अध्यापक
पुरस्कार–2018

श्री यतीश कुमार एक ऐसे आदर्श अध्यापक हैं, जो शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों को विकसित कर शैक्षिक तकनीक को उन्नत और ग्राह्य बना रहे हैं। वर्ष 2018 में आपको मा. मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के कर कमलों द्वारा अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राज्य स्तरीय Expert टीम ने इनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये कार्यों को बहुत ही गहनता से देखा और सराहना की। शिक्षा के क्षेत्र में आपके अभिनव प्रयोगों, बेस्ट प्रैक्टिसेज, आई.सी.टी. आधारित शिक्षण, विद्यालय में किये गये उत्कृष्ट कार्य, समुदाय के साथ मधुर सम्बन्ध, जिला स्तर व राज्य स्तर पर प्रशिक्षणों में सक्रिय प्रतिभगिता, नवाचारों एवं माड्यूल में लेखन कार्य आदि में पूर्ण सहभागिता आपके महत्त्वपूर्ण कार्य हैं।

आपके द्वारा विकसित नवाचार ''उच्च प्राथमिक स्तर के लिये ''गणित प्रयोगशाला'' उच्च तकनीक पर आधारित है, जिससे गणित जैसे कठिन विषय को छात्र आसानी से सीखकर याद कर लेते हैं।

यतीश कुमार जी अपने विद्यालय कारेका में नवाचारों के माध्यम से शैक्षणिक गतिविधियाँ चलाने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। गणित आपका प्रिय विषय है जिसमें बच्चों की कठिनाइयाँ दूर करने के लिए आपने नोकास्ट–लोकास्ट गणित विज्ञान की प्रयोगशाला बनायी। आपके इस नवाचार को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा तैयार किये मॉड्यूल ''शिक्षण संग्रह'' में प्रमुख रूप से स्थान दिया गया है।

आपके इस नवाचार से कक्षा 6, 7 और 8 के छात्रों को गणित एवं बीजगणित जैसे विषय को समझने एवं याद करने में काफी आसानी हुयी है।

आपकी नवाचारों के माध्यम से दी जा रही शिक्षा का ही असर था कि जब आपकी नियुक्ति कारेका पूर्व माध्यमिक विद्यालय में हुयी थी तो मात्र 18 विद्यार्थी थे, वर्तमान में विद्यालय में 70 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। विद्यार्थी खेलकूद गतिविधियों में भी अग्रणी रहते हैं। करोना काल में करोना गाइड लाइन का पालन करते हुये आप बच्चों को उनके घर पर ऑनलाइन शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

❖

एक विद्यालय ऐसा जहां मिलती है कॉन्वेंट जैसी शिक्षा

(प्राथमिक विद्यालय सहजनी, विकास खण्ड बहेड़ी, जनपद बरेली)

सरकारी विद्यालय का नाम सुनते ही मन मे एक तस्वीर सामने आती है जिसमें गाँव का एक ऐसा विद्यालय जिसके चारों ओर गन्दगी, टूटी चारदीवारी, टूटे खिड़की दरवाजे, जानवरों का प्रांगण में पड़ाव आदि दिखाई देता है। ऐसा नहीं है कि सरकार इसकी ओर ध्यान नहीं देती सरकार की प्राथमिकता में सदैव ही सरकारी विद्यालय रहे हैं। जिसकी नीतियों के फलस्वरूप आज विद्यालयों की तस्वीर बदल रही है। आज आपका परिचय एक ऐसे विद्यालय से करा रहा हूँ जिसका नाम है **प्राथमिक विद्यालय सहजनी** जो जनपद बरेली के बहेड़ी ब्लॉक में स्थित है जिसका अतीत भी कभी इसी तरह का ही था। परंतु आज वहाँ न केवल वो सब सुविधाएँ हैं जो एक कॉन्वेंट विद्यालय में मिलती है बल्कि गुड़वत्तापूर्ण शिक्षा भी प्रदान की जाती है। इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक के पद पर राजीव सिंह तैनात हैं। वे बताते है कि जब हमने विद्यालय के सुधार कार्य की शुरूआत की तो जन सहयोग भी मिलना आरम्भ हो गया। यह हमारे लिए मोटिवेशन था। हमने सरकारी विद्यालय को कॉन्वेंट विद्यालय में परिवर्तित करने की ठानी। आरम्भ में हमारे बच्चों के पास न तो बैठने के लिए फर्नीचर था न पीने को स्वच्छ पेयजल था और न ही अच्छी गुणवत्ता का शौचालय था। इसके लिए वर्ष 2015 में हमने एक योजना तैयार की जिसमें सीमित संसाधनों को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के विकास का कार्य प्रारंभ

सम्मान | इस स्कूल को राज्य स्वच्छता विद्यालय पुरस्कार मिला

सहजनी प्राथमिक स्कूल ने जिले का बढ़ाया गौरव

संवाद सहयोगी, बहेड़ी : सफलता कभी सुविधाओं की मोहताज नहीं होती। यह बात तहसील के गांव सहजनी स्थित प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों व बच्चों की मेहनत ने सिद्ध कर दी। मंगलवार को प्रदेश के 17 प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों को राज्य स्तरीय स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार से नवाजा गया, जिनमें बरेली जिले के एकमात्र सहजनी विद्यालय को चुना गया।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शुरू की योजना

स्कूलों में स्वच्छता एवं स्वस्थ व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने पिछले साल जिला, राज्य, और राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छ विद्यालय योजना शुरू की थी। इसके लिए पेयजल, शौचालय, साबुन से हाथ धोने, विद्यालय का सुचारू संचालन, रखरखाव व बच्चों के क्षमता निर्माण के मापदंड तय किए थे। 90 से 100 फीसद अंक वाले विद्यालयों को ब्लू श्रेणी देने का निर्णय किया गया था।

मंगलवार को लखनऊ में हुए समारोह में पुरस्कार प्राप्त करते अध्यापकगण • जागरण

स्कूल स्टाफ ने प्राप्त किया पुरस्कार

लखनऊ में आयोजित समारोह में प्राथमिक विद्यालय सहजनी को भी पुरस्कृत किया गया। प्रधानाध्यापक राजीव सिंह, एनपीआरसी कविंद्र सिंह ने विद्यालय की ओर से पुरस्कार प्राप्त किया।

दैनिक जागरण ने विद्यालय के प्रयास को रखा था सामने

दैनिक जागरण ने सर्व प्रथम विद्यालय में किए जा रहे स्वच्छता और पढ़ाई की गुणवत्ता के प्रयासों को प्रमुखता से रखा था। जिससे अध्यापकों व बच्चों की मेहनत को और भी ज्यादा निखारने में सहयोग मिला।

> विद्यालय को राज्य पुरस्कार मिलना तहसील के लिए गौरव की बात है। मैं अपनी तरफ से स्कूल स्टाफ, ग्रामीणों व नन्हे-मुन्ने बच्चों को बधाई देती हू।
> **ममता मालवीय**, एसडीएम बहेड़ी

> यह सम्मान पाने वाला सहजनी विद्यालय जिले का पहला स्कूल बनने पर समस्त स्टाफ व बच्चों को बधाई। उम्मीद है इससे तहसील के अन्य विद्यालय भी स्वच्छता के प्रति प्रेरित होंगे।
> **भानु शंकर गंगवार**, खंड शिक्षा अधिकारी बहेड़ी

किया। इस कार्य में हमारी मदद की हमारे संकुल प्रभारी डॉ. कवीन्द्र सिंह व सहायक अध्यापक अमित सिंह राणा ने। हमने मिलकर सबसे पहले बच्चों के बैठने की व्यवस्था की। हमारे पास विद्यालय में कुछ पुराने बोर्ड थे जिनको हमने फर्नीचर में तब्दील किया और कम बजट में बच्चों के बैठने की व्यवस्था हो गयी। उसके बाद बच्चों के लिए स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के लिए विद्यालय के सरकारी नल में सबमर्सिबल और 1000 लीटर के टैंक की व्यवस्था की। सभी कक्षों में पंखे तो थे लेकिन ग्रामीण परिवेश में विद्युत की खराब व्यवस्था होने के कारण अक्सर वहां लाइट नहीं आती थी जिससे बच्चों को इसका लाभ नहीं मिल पाता था। इसके लिए हमने विद्यालय में 2 केवीए का इनवर्टर 5 केवी का जनरेटर तथा एक सोलर लाइट की व्यवस्था करायी। सांसद निधि से कक्षाओं को आकर्षक बनाने हेतु TLM लगाये गए। विद्यालय को हरा–भरा बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे लगाये गए। विद्यालय में हर मौसम में सुंदर–सुंदर मनमोहक फूल सदैव खिले रहते हैं जो सभी में एक नई ऊर्जा का संचार करते हैं। अच्छा कार्य करने में बच्चों की भागीदारी सबसे अहम रहती है। बच्चे पूर्ण तन्मयता से अपनी–अपनी क्यारियों की देखभाल करते हैं और विद्यालय को हरा–भरा बनाने में सहयोग करते हैं। इसी बीच वर्ष 2016–17 में हमने अपने विद्यालय का पंजीकरण स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार के लिए कराया। जिसमें हमारे विद्यालय को राज्य स्तर पर आठवां पुरस्कार प्राप्त हुआ और विद्यालय को एक नई पहचान मिली। आप्रेशन कायाकल्प के प्रथम चरण के अंतर्गत विद्यालय में उच्च कोटि का शौचालय निर्मित हुआ जिसमें सामान्य छात्र–छात्राओं के साथ–साथ दिव्यांग बच्चों के लिए भी अलग से शौचालय निर्मित हुआ। बच्चों की पहुंच को ध्यान में रखते हुए हैंडवॉश यूनिट व शिक्षकों द्वारा स्वच्छ पेयजल हेतु आर.ओ. की व्यवस्था भी की गई। हमारे विद्यालय का शौचालय मॉडल शौचालय रूप में चयनित किया गया और इसे अन्य विद्यालयों को अपनाने की सलाह भी दी गयी। स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2017–18 के द्वितीय चरण में भी विद्यालय को जनपद में प्रथम स्थान व प्रदेश स्तर पर पांचवा स्थान प्राप्त हुआ। हमारा प्रयास लगातार बच्चों को ऐसी शिक्षा देना है जिसका उपयोग वह अपने दैनिक जीवन में कर सकें। इसके लिए हम बच्चों को खेल–खेल में शिक्षा तथा उनको आसपास के वातावरण से जोड़ते हुए शिक्षा प्रदान करने की कोशिश करते हैं। वर्ष 2018 में मुख्य विकास अधिकारी श्री सत्येंद्र कुमार जी द्वारा जनपद के टॉप टेन विद्यालयों में बैंक ऑफ बड़ौदा व पंजाब नेशनल बैंक के सहयोग से कंप्यूटर लैब व डिजिटल लाइब्रेरी (कलाम लाइब्रेरी) का निर्माण कराया गया। इसमें बच्चों को डिजिटल माध्यम से पुस्तकों का अध्ययन कराया जाता जाता है। हमारा विद्यालय 2018 में अंग्रेजी माध्यम के लिये चयनित किया गया और विद्यालय में दो नए शिक्षकों का चयन हुआ। इनके साथ मिलकर विद्यालय की शिक्षण व्यवस्था को और बल दिया गया। हमारे इस प्रयास को देखते हुए आज हमारे विद्यालय में आस–पास के 3 गांव के बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। पहले वे सब के प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ रहे थे। वहां से नाम कटा कर विद्यालय में प्रवेश लिया है। हमारा समस्त स्टाफ एक टीम के रुप मे कार्य करता है। सभी पूर्ण कटिबद्धता से अपना किरदार निभाने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं।

❖

राजीव सिंह (प्र.अ.)
प्राथमिक विद्यालय सहजनी (अंग्रेजी माध्यम)
विकास क्षेत्र बहेड़ी, बरेली
मो. : 9758884242

ऐसा विद्यालय जहां प्रवेश पाकर बच्चे गौरान्वित होते हैं

(प्राथमिक विद्यालय धौरहरा विकास खण्ड कर्नलगंज, जनपद गोण्डा)

एक स्कूल ऐसा भी है जहां प्रवेश के लिए लम्बी लाइन लगती है। यू.पी. के गोण्डा जिले में कर्नलगंज तहसील का स्मार्ट प्राथमिक विद्यालय धौरहरा इसका जीता जागता उदाहरण है। जहाँ अगले वर्ष के प्रवेश के लिये अभी से सीट बुक करानी पड़ रही है। यह स्कूल सरकारी स्कूलों के लिये तो मिशाल है ही कान्वेंट स्कूल भी इस स्कूल से सीख ले रहे हैं।

इस स्कूल को खास और इस मुकाम पर पहुंचाने का काम किया है यहाँ के प्रधानाध्यापक **श्री रवि प्रताप सिंह** ने। वे ऐसे युवा शिक्षक हैं, जो तमाम शिक्षकों के लिये प्रेरणा श्रोत बन चुके हैं। यूथ इन्हें अपने आईकॉन के रूप में मानते है। इन्होंने अपने कार्य, लगनशीलता और प्रतिभा के दम पर बेसिक शिक्षा विभाग में तमाम प्रतिकूल परिस्थियों के बावजूद शिक्षक धर्म के उस मानवीय पहलू को कर दिखाया, जिसे हम बेसिक शिक्षा में स्वप्न के रूप में देख सकते हैं। श्री रवि प्रताप सिंह ने देश के स्कूलों के लिये कई सारे ई–कंटेंट तैयार किये हैं। आपने UDBHAW नामक एंड्राइड मोबाइल एप्लीकेशन तैयार किया है। इसमें कक्षा 1 से 5 तक के छात्रों को उनकी पाठ्य पुस्तक से सम्बन्धित प्रश्न और उनके उत्तर मिलेंगे। आपने छात्रों के लिये एनीमेशन वीडियो भी बनाये हैं। रवि प्रताप सिंह ने कई पुस्तकें भी लिखी हैं जिनके नाम हैं 'मैं पढ़ने जाऊँगा', 'नन्हें चित्रकार', 'नन्हा कछुआ' और 'रीशू चली चिड़ियाघर'।

आपके विद्यालय में वे सभी सुविधाएँ हैं जो किसी अच्छे कान्वेंट स्कूल में होनी चाहिए जैसे :

प्रदेश का पहला इन्टरेक्टिव डिजिटल क्लास रूम, स्मार्ट क्लास, प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ाई, कम्प्यूटर शिक्षा, शैक्षिक टेलिविजन, डिजिटल बुक्स, डिजिटल लाइब्रेरी, आधुनिक ओपन लाइब्रेरी, छात्रों हेतु टैबलेट, स्कूल परिसर व छात्रों के सुरक्षा हेतु आनॅलाइन सी.सी.टी.वी. कैमरे, टाई, बेल्ट, आई कार्ड, डायरी आदि की व्यवस्था, हाई स्पीड ब्राडबैंड व वाई–फाई की सुविधा, इनवर्टर, लाईट साउंड सिस्टम, माइक, पंखों की सुविधा, सम्पूर्ण परिसर सोलर पैनल से आच्छादित, आधुनिक हैण्डवाश यूनिट, छात्रों के बैठने हेतु आधुनिकतम फर्नीचर उपलब्ध है। आपके विद्यालय में छात्रों को नियमित शैक्षिक भ्रमण पर भी ले जाया जाता है।

आपके विद्यालय में प्रदेश का पहला इन्टरेक्टिव डिजिटल क्लासरूम स्थापित किया गया है। विद्यालय में स्मार्ट क्लास के अन्तर्गत प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ाई हो रही है। बच्चों को कम्प्यूटर की शिक्षा प्रदान की जा रही है। टेलीविजन की सहायता से उन्हें शैक्षिक कार्यक्रम देखने की सुविधा है। विद्यालय में डिजिटल बुक्स के साथ डिजिटल लाइब्रेरी व ओपेन लाइब्रेरी की सुविधा है। बच्चों के लिये टेबलेट भी दिये गये है। स्कूल परिसर की सुरक्षा हेतु ऑनलाइन सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाये गये हैं। छात्रों को टाई, बेल्ट, आईकार्ड व डायरी भी जन सहयोग से दी जाती है। इन्टरनेट कनेक्टिविटी के लिये ब्राडबैंड युक्त वाई.फाई. की सुविधा है। विद्यालय में विद्युत कनेक्शन के साथ ही सोलर पैनल भी लगाये गये हैं, जिनसे पावर कट से छुटकारा भी मिल चुका है। विद्यालय में आधुनिक हैण्डवाश यूनिट, शौचालय, शुद्ध पेय जल की सुविधा के साथ ही उनके बैठने के लिये आधुनिक फर्नीचर भी उपलब्ध है।

स्कूल की विशेषतायें :

- विद्यालय में आधुनिक शैक्षिक प्रणाली के माध्यम से शिक्षण कार्य।
- नियमित आदर्श प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाता है।
- छात्रों के चहुमुखी विकास पर जोर देते हुये उन्हें बेसिक शिक्षा परिषद् की पाठ्य पुस्तकों से शिक्षण कार्य कराया जाता है।
- छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिये नियमित पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन कर प्रतियोगितायें करायी जाती हैं।
- विद्यालय में छात्रों का जन्म दिन मनाया जाता है।
- स्टार आफ द मंथ में छात्रों को स्टार प्रदान किया जाता है।
- उन्हें नाटक, स्टोरी मैपिंग, कार्टून, निर्माण द्वारा शिक्षण दिया जाता है।

यहाँ की पढ़ाई है सबसे जुदा :

अध्यापक श्री रवि प्रताप सिंह का कहना है कि हमारा लक्ष्य है कि छात्रों को पढ़ाई बोरिंग न लगे इसके लिये हमने इस स्कूल को केवल पाठशाला न बनाकर मस्ती की पाठशाला बनाया है। यहाँ पाठ को पढ़ाने के लिये तकनीक का सहारा लिया जाता है, जिससे छात्र उसे भलीभांति समझ जाते हैं। सभी विषयों व टॉपिक के लिये गतिविधि भी करायी जाती है। छात्रों से मॉडल बनवाये जाते हैं। अधिकतर छात्र गरीब घरों से हैं, इसलिये मॉडल बनाने के लिये आवश्यक वस्तुयें उपलब्ध करायी जाती हैं। छात्र खेल–खेल में कब सीख जाते हैं वह जान भी नहीं पाते और व पूरी मस्ती में पढ़ाई करते हैं।

छात्रों के लिये यहाँ मैथ किट और इंग्लिश किट तैयार की गयी है, जिसे देखने के लिये प्राइवेट स्कूल के बच्चे यहां आते हैं। टॉपिक वाइज टीचिंग लर्निंग मैटीरियल (TLM) तैयार किया गया है, जिसका उपयोग यहाँ पढ़ाने के दौरान किया जाता है।

कांसेप्ट मैपिंग, ऑब्जेक्ट मैपिंग आदि यहाँ की पढ़ाई में शामिल है।

प्रवेश के लिये लगती है लाइन :

इस स्कूल में प्रवेश दिलाने के लिये अभिभावक अपने बच्चों के साथ लाइन में लग कर प्रवेश कराते हैं। इस वर्ष की भीड़ को देखते हुये अगले सत्र में प्रवेश के लिए अभी से बुकिंग शुरू कर दी गयी है। जिन पैरेंट्स को अपने बच्चों के प्रवेश कराना है वह इस वर्ष बुकिंग करा रहे हैं, जिससे सत्र प्रारम्भ होने पर प्रवेश मिल सके।

इस स्कूल को देखने की ललक है सबके मन में :

हर कोई इस स्कूल को देखने के लिये उत्सुक रहता है। स्कूल देखने लिये भारत ही नहीं विदेशी मेहमान भी आते हैं। स्कूल की गतिविधियों की चर्चा भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी हो चुकी है तभी तो कई बार अमेरिका, वियतनाम, और हांगकांग जैसे देशों से वैज्ञानिक, शोधार्थी आ चुके हैं।

धौरहरा गाँव के लोग भी अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं। ग्राम प्रधान राम कुमार गुप्ता कहते हैं कि मुझे यह बताते हुये गर्व होता है कि मैं यहां का प्रधान हूँ। इस स्कूल को और यहाँ के प्रधानाध्यापक श्री रवि प्रताप सिंह को कई दर्जन पुरस्कार मिल चुके हैं। कई बार इन्होंने उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व भी किया है।

❖

सौजन्य से
रवि प्रताप सिंह
प्रधानाध्यापक,
प्रा.वि. धौरहरा
ब्लॉक व तहसील–कर्नलगंज,
जनपद–गोण्डा

एक ऐसा प्राथमिक विद्यालय, जिसके सामने प्राइवेट विद्यालय न टिक सके

(आदर्श प्राथमिक विद्यालय सिरकौली कुर्मिन, विकास खण्ड, रामनगर, जनपद बाराबंकी)

प्रदेश की राजधानी लखनऊ से सटे बाराबंकी जिले के विकास खण्ड–रामनगर के सिरकौली कुर्मिन ग्राम स्थित आदर्श प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक, श्री विवेक मिश्र हैं। 109 छात्र–छात्राओं वाले इस विद्यालय में प्रधानाध्यापक के अतिरिक्त एक शिक्षा मित्र कार्यरत है। ग्राम सभा में इस विद्यालय के अतिरिक्त 04 प्राथमिक विद्यालय एक उच्च प्राथमिक विद्यालय और दो प्राइवेट विद्यालय स्थापित हैं।

प्रधानाध्यापक श्री विवेक मिश्र ने स्वयं, शासन के वित्तीय मदद और जन सहयोग से विद्यालय में बच्चों के लिये फर्नीचर, कूलर एल.ई.डी. टीवी, प्रोजेक्टर और प्रयोगशाला स्थापित की है। विद्यालय में पुस्तकालय भी स्थापित किया गया है, जिसमें लगभग 500 पुस्तकें हैं। विद्यालय में खेलकूद की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये खेल का सामान भी जुटाया गया है। विद्यालय परिसर में खाली पड़े स्थान पर किचेन गार्डेन बनायी गयी है, जिसमें मौसम के अनुसार सब्जियों की खेती की जा रही है। सब्जियों के साथ–साथ औषधीय पौधों की भी खेती हो रही है, जिनका उपयोग बच्चों और ग्रामीणों द्वारा किया जा रहा है। विद्यालय में उत्पादित सब्जियों का उपयोग करोना से पूर्व मध्यान्ह भोजन में भी किया गया था। वर्तमान समय में सब्जियों का उपयोग आवश्यकतानुसार ग्रामीणों द्वारा किया जा रहा है। किचेन गार्डेन से पर्यावरण संरक्षण के साथ अभिभावकों में भी विद्यालय के प्रति आदरभाव में वृद्धि हुयी है।

विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता की वृद्धि के लिये 200 से ज्यादा टी.एल.एम. तैयार करने के साथ ही लर्निंग कार्नर, लिसनिंग कार्नर तथा समय–समय पर भाषा मेला, गणित मेला, अंग्रेजी मेला का आयोजन किया जाता है। विद्यालय की अपनी **www.p-sirkauli.com** वेबसाइट है, जिस पर विद्यालय के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। फेसबुक के माध्यम से बच्चों द्वारा खुद का न्यूज चैनल है, जिस पर बच्चों द्वारा अभिभावकों तथा प्रत्येक माह किसी बड़े अधिकारी का साक्षात्कार प्रसारित होता है। बच्चे स्कूल का एक मासिक पेपर भी निकालते हैं। विद्यालय को राज्य स्तर पर ''उत्कृष्ट विद्यालय'' का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। प्रधानाध्यापक को शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ पुस्तक लेखन, लेसन प्लान और कहानी में राज्य स्तर पर सम्मानित किया गया है। प्रधानाध्यापक श्री मिश्र द्वारा कई स्थानों पर अपने बनाये टी. एल.एम. का प्रस्तुतीकरण किया गया। राज्य स्तर पर आयोजित होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में आपने लगभग 20 प्रशिक्षणों तथा 10 से ज्यादा अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में विभाग का प्रतिनिधित्व किया है।

करोना काल में श्री मिश्र द्वारा छात्रों के पठन–पाठन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। अपने विद्यालय में गुणवत्तापूर्वक शिक्षा देने के साथ आप वेबिनार, कार्यशालाओं में भाग लेते हैं। विभाग में कार्यरत शिक्षकों का टी.एल.एम. आदि का भी प्रशिक्षण दे रहे हैं।

विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं, ढांचागत विकास और शैक्षणिक उत्थान का परिणाम यह हुआ कि छात्र–छात्राओं की नामांकन संख्या आदर्श विद्यालय सिरकौली में बढ़ती चली जा रही है। **इसके चलते दोनों प्राइवेट विद्यालय** बन्द हो चुके हैं।

❖

सौजन्य से
विवेक मिश्र
प्राथमिक विद्यालय, सिरकौली
(अंग्रेजी माध्यम), विकास खण्ड–रामनगर, जनपद–बाराबंकी

जनपद सोनभद्र का आदर्श विद्यालय-मगरदहा

ग्राम पंचायत, मगरदहा में स्थित प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय मगरदहा, सोनभद्र के जिला मुख्यालय, रॉबर्ट्सगंज से 40 कि.मी. कि दूरी पर सोनभद्र एवं मिर्जापुर जनपद की सीमा पर स्थित है। यह प्रदेश के कुछ विद्यालयों में से है, जो जटिल भौगोलिक क्षेत्र में अतिपिछड़े होने के बावजूद मॉडल विद्यालयों में तब्दील हो गए हैं। विद्यालय के प्रधानाध्यापक के दूरदर्शी नेतृत्व ने ग्राम पंचायत के सहयोग से इस विद्यालय को एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया है। जिस तरीके से विद्यालय का कायाकल्प हुआ है, वह सीखने और दूसरे विद्यालयों के लिए उत्कृष्ट उदाहरण है।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक, श्री महेन्द्र दुबे कहते हैं कि जब उन्होंने 2013 में विद्यालय में योगदान किया था, उस समय विद्यालय की स्थिति काफी चुनौतीपूर्ण थी। विद्यालय का मुख्य गेट छोटा था, जिससे आम ग्रामीण विद्यालय परिसर में आसानी से कभी भी आ जाते थे, विद्यालय की चाहारदीवारी भी एक ओर से टूटी हुई थी। यह स्थिति विद्यालय के लिए बहुत खराब थी। विद्यालय परिसर में पेड़–पौधे नहीं थे। कक्षाओं में आवश्यक बुनियादी सुविधाओं का अभाव था।

लगभग 200 नामांकित बच्चों में से औसत 50 प्रतिशत उपस्थिति रहती थी। अनुपस्थित बच्चों में से अधिकांश के माता–पिता भी उन्हें अध्ययन के लिए भेजने के इच्छुक नहीं थे।

ऐसी दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए उन्होंने कई मोर्चों पर काम करना शुरू किया। अपने साथी शिक्षकों के साथ, आप नियमित रूप से बच्चों के माता–पिता से व्यक्तिगत रूप से मिलने जाते थे और उन्हें शिक्षा के महत्व के बारे में सलाह देते थे। उन्होंने विद्यालय प्रबन्ध समिति को सक्रिय किया। ग्राम प्रधान श्री राजाराम जी की मदद से विद्यालय

प्रबन्ध समिति की कई बैठकें करवाई। छात्रों की मदद से विद्यालय को हरित विद्यालय बनाने के उद्देश्य से वृक्षारोपण किया गया।

छात्रों को मध्यान्ह भोजन के तहत दिये जाने वाले भोजन में पोषण के स्तर को बढ़ाने हेतु विद्यालय के परिसर का इस्तेमाल करते हुए पोषण वाटिका लगा कर इसका निरन्तर रख–रखाव सुनिश्चित किया गया। शुरू में कई बच्चे पर्यावरण और हरित विद्यालय परिसर को लेकर जागरूक

नहीं थे, फिर भी उन्होंने उनके साथ संवाद स्थापित करने के लिए लगातार कोशिश की ताकि वे परिसर को हरा–भरा और स्वच्छ बनाये रखने के लिए आगे आ सकें।

श्री महेन्द्र दुबे ने व्यक्तिगत प्रयास से विद्यालय के प्रांगण को एक हरित पार्क में परिवर्तित कर उसे जनपद का एक आकर्षण केन्द्र बना दिया। यहां के छात्र स्काउट गाइड एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जनपद का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके इस प्रयास को देखते हुए श्री महेन्द्र कुमार दुबे को बेसिक शिक्षा निदेशालय, निशातगंज, लखनऊ के विद्या भवन सभागार में आयोजित राज्य स्तरीय उत्कृष्ट शिक्षा सम्मान समारोह में शिक्षा निदेशक (बेसिक), श्री सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह ने सम्मानित किया है।

जनपद के बेसिक शिक्षा अधिकारियों ने तकनीकी सहयोग के लिए निरन्तर विद्यालय का दौरा किया, तो चीजें तेजी से बदलने लगी। श्री दुबे गर्व के साथ कहते हैं कि विद्यालय में आपरेशन कायाकल्प के अर्न्तगत कक्षाओं का जीर्णोद्धार और टाइलिंग, परिसर की चाहारदीवारी, बालक–बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय, हाथ धोने की इकाइयाँ और पीने के पानी के लिए आर.ओ. यूनिट की स्थापना के कार्य किए गये हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर में आए परिवर्तन ने छात्र/छात्राओं की उपस्थिति बढ़ाने पर काम किया। विद्यालय में उपयोग किए गये सैनिटरी नैपकिन के निपटान के लिए एक भस्मक (इंसीनरेटर) का निर्माण किया गया है।

कम्पोजिट विद्यालय मगरदहा की सफलता में ग्राम पंचायत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विद्यालय में छात्रों के प्रदर्शन और अध्ययन एवं छात्रों की भागीदारी से सम्बन्धित अन्य मुद्दों पर चर्चा करने के लिए अलग–अलग बैठकों एवं कार्यक्रमों का आयोजन निरन्तर किया जाता है। संसाधनों की कमी के बावजूद यह विद्यालय प्रदेश स्तर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम में उपविजेता रहा है। विद्यालय में स्काउटिंग का दीक्षांत समारोह का आयोजन निरन्तर होता है, जो एक बड़ी उपलब्धि है।

कम्पोजिट विद्यालय मगरदहा जनपद में लोकप्रियता की नई ऊँचाईयाँ हासिल कर रहा है। आसपास के ग्राम पंचायतों के कई बच्चे विद्यालय में प्रवेश के लिए भी आ रहे हैं। विद्यालय में नामांकन 50 प्रतिशत बढ़ गया है, उपस्थिति 50 प्रतिशत से बढ़कर 95 प्रतिशत हो गयी है। श्री दुबे सीमित स्थान की उपलब्धता के कारण विद्यालय में सभी को समायोजित करने में असमर्थता व्यक्त करते हैं, लेकिन अन्य विद्यालयों से आगे आने और खुद को मॉडल विद्यालय में बदलने की सीख देते हैं।

❖

सौजन्य से
अली इमरान
सलाहकार
समग्र शिक्षा अभियान

विद्यालयों में किचेन गार्डेन : पोषण एवं सुरक्षा साथ-साथ

किचेन गार्डेन वह वाटिका है, जो घर या परिसर के नजदीक बनायी जाती है, जिसमें वर्ष भर सब्जियां और कुछ फलदार पौधे लगाकर घर की जरूरतें पूरी की जाँय। किचेन गार्डेन का नामकरण भी इसी आधार पर हुआ कि किचेन या रसोई से निकलने वाले पानी व सब्जियों के छिलके, अवशेष खाद्य पदार्थ आदि का उपयोग वाटिका में सिंचाई और जैविक खाद के रूप में किया जाय तथा वाटिका से निकलने वाली सब्जियों और फलों का प्रयोग किचेन में भोजन बनाने में हो। घरों के आस-पास खाली जमीन पर और शहरों में जहां भूमि उपलब्ध नहीं है वहां अक्सर लोग छतों पर किचेन गार्डेन तैयार कर लेते हैं, लेकिन किसी विद्यालय में किचेन गार्डेन बनाना एक महत्वपूर्ण कार्य है। ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अक्सर स्कूल के पास काफी भूमि खाली पड़ी रहती है, लेकिन रूचि न होने अथवा सिंचाई के लिये पानी की कमी के कारण अधिकांश अध्यापकों का इस ओर ध्यान नहीं गया है। विद्यालयों में किचन गार्डेन बनाने के लिये शासन द्वारा आर्थिक सहायता भी दी जा रही है।

❖ किचेन गार्डन बनाने के उद्देश्य :

- बच्चों की मौसमी सब्जियों की उपयोगिता व उनमें पाये जाने वाले पोषक तत्वों के बारे में जानकारी बढ़ाना, जिससे वह यह संदेश अपने परिवार के सदस्यों तक भी पहुंचा सकें।
- मध्यान्ह भोजन योजनान्तर्गत बनाये जा रहे भोजन में किचेन गार्डेन में उगायी गई सब्जियों को मिलाते हुये उसे और अधिक पोषक बनाना।
- छात्रों में मिल-जुल कर कार्य करने की भावना विकसित करना तथा मनोरंजन एवं व्यायाम के

साथ-साथ स्वयं उगाये गये पौधों के प्रति स्वामित्व/जिम्मेदारी की भावना भी विकसित किया जाना।

- विद्यालय में उपलब्ध अतिरिक्त भूमि का सदुपयोग।
- पर्यावरण में सुधार तथा विद्यालय में सब्जियों फलदार पौधों से विद्यालय की साज-सज्जा और वातावरण में सुधार होगा।
- छात्र-छात्राओं के पोषण में सुधार।

❖ जमीन/स्थान का चिन्हीकरण :

- ग्राणीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में उपयुक्त जमीन की उपलब्धता होती है, किन्तु शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में जमीन न होने की दशा में छतों/अन्य स्थान पर गमलों, मटके, बोरे, जूट के थैलों आदि में पौधे उगाने की व्यवस्था की जा सकती है।
- किचेन गार्डेन के लिये चिन्हित स्थान यथासम्भव खुला व पर्याप्त सूर्य की रोशनी की उपलब्धता वाला होना चाहिए। पौधों को कम से कम 05 घंटे धूप मिलनी चाहिए।
- किचेन गार्डेन बनाने से पहले फल सब्जियों की सिंचाई की उचित व्यवस्था करा लेनी चाहिए।

- चिन्हित स्थान बाउण्ड्रीवाल अथवा बाड़ (फैन्सिंग) आदि से सुरक्षित होना चाहिए।
- स्थान विद्यालय के प्रांगण में अथवा निकटवर्ती होना चाहिए, जिससे अध्यापक/छात्र सुगमता से वहां कार्य कर सकें तथा पठन–पाठन कार्य में व्यवधान न हो।

❖ **किचेन गार्डन की स्थापना व रख–रखाव :**

- प्रथम बार पोषण वाटिका बनाने में ग्राम्य विकास विभाग/पंचायती राज विभाग तथा स्वयं सहायता समूह की महिलाओं से आवश्यक सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।
- उद्यान विभाग से पोषण वाटिका में लगाने के लिए बीज व पौधों को आवश्यकतानुसार प्राप्त किया जाय।
- किचेन गार्डन को सफलतापूर्वक विकसित किये जाने एवं सुरक्षित रख–रखाव हेतु समुदाय/मां समूह/अभिभावकों का सहयोग लिया जाना चाहिए।
- छात्रों के विभिन्न समूह तैयार कर प्रत्येक समूह द्वारा कतिपय पौधे/गमले आदि को अंगीकृत किया जाये तथा उन पौधों एवं गमलों की सम्पूर्ण जिम्मेदारी छात्र समूह को दी जाय।
- अंगीकृत पौधों के पास छात्रों के नाम का बोर्ड भी लगाया जाए, जिससे उन्हें अपने हाथ से लगाये गये पौधों के प्रति अपनत्व का बोध हो।
- छात्र समूहों द्वारा अंगीकृत पौधों की गुणवत्ता के सापेक्ष छात्रों का उत्साहववर्धन किया जाय।
- छात्रों को प्रेरित किये जाने हेतु विद्यालय में होने वाली प्रार्थना सभा में किचेन गार्डेन विकसित किये जाने के संबंध में चर्चा/गोष्ठी, गतिविधियां आयोजित की जायेंगी, जिसमें साग–सब्जी/फल

की विशेषता के बारे में बताकर उनके ज्ञान में वृद्धि की जाय।

- किचेन गार्डेन की स्थापना व रख–रखाव में छात्रों के सक्रिय योगदान/श्रमदान से न सिर्फ छात्रों में परस्पर सहयोग की भावना विकसित होगी, अपितु उनकी क्षमता में भी वृद्धि होगी।
- मौसम के अनुरूप उगाई गई सब्जियों की पैदावार के दृष्टिगत विभिन्न दिवस यथा–गोभी दिवस, टमाटर दिवस, बैंगन दिवस इत्यादि के नाम से मनाया जा सकता है।

❖ **फलों/सब्जियों का चयन :**

- सब्जियों व फलों का चयन जलवायु परिस्थितयों तथा छात्रों की पसंद के अनुसार किया जाये।
- मेड़ों का उपयोग जड़ वाली फसल के लिए किया जाये।
- रास्ते के किनारे वाली क्यारियों का उपयोग पत्ती वाली सब्जियों के लिए किया जाये।
- वाटिका के अंत में दो खाद के गड्ढों का निर्माण कर विद्यालय के जैविक कचरा को खाद के लिए उपयोग किया जाये।
- प्रदेश की जलवायु परिस्थिति के अनुसार 03 सीजन में उगाई जाने वाली सब्जियों का विवरण निम्नवत् हैः–

जायद वाली सब्जियाँ : भिन्डी, पालक, लोबिया, लौकी, करेला, खीरा, कददू, तरबूज, खरबूजा।

खरीफ वाली सब्जियाँ : चौलाई, भिन्डी, बैंगन, लोबिया, करेला, तुरई, अरबी, कददू, लौकी, खरीफ प्याज, सेम।

रबी वाली फसल : टमाटर, मटर, मिर्च, पत्ता गोभी, फूल गोभी, पालक, सरसों, मैथी, सोया, धनिया, बथुआ, शिमला मिर्च, बैंगन, सलाद पत्ता, ब्रोकोली, प्याज, लहसुन, चुकंदर, शलजम, गाजर मूली।

❖

पूर्व माध्यमिक विद्यालय जन्धेड़ी : किचेन गार्डेन में नवीन प्रयोग

विद्यालय में किचेन गार्डेन बनाने का अनोखा प्रयोग किया है। जनपद शामली, विकास खण्ड कैराना के पूर्व माध्यमिक विद्यालय जन्धेड़ी के प्रभारी प्रधानाध्यापक श्री धर्मेन्द्र कुमार शर्मा ने। आपके विद्यालय में काफी खाली जमीन पड़ी थी लेकिन चाहारदीवारी न होने से कोई योजना नहीं बनाई जा सकती थी।

विद्यालय की चाहरदीवारी बन जाने के बाद विद्यालय की अवारा पशुओं आदि से सुरक्षा हो गयी। विद्यालय प्रांगण में काफी भूमि खाली पड़ी थी। उस खाली पड़ी भूमि का श्री धीरेन्द्र शर्मा के मन में किचेन गार्डेन के रूप में विकसित करने पर विचार आया। सबसे पहले उन्होंने अभिभावकों व स्थानीय लोगों के सहयोग से भूमि को समतल किया। समतल भूमि को क्यारियों में बांटकर सिंचाई के लिये नालियाँ भी बनायी गयीं। किनारे की ओर गेंदा तथा फलदार पौधे और बीच

की क्यारियों में सब्जियाँ लगायी गयी। कुछ समय बाद अच्छी देखभाल से खाली पड़ा मैदान हरी–भरी सब्जियों से भूरपूर नजर आने लगा।

विद्यालय की किचेन गार्डेन से मौसम के अनुसार बैगन, टमाटर, मूली, गोभी, पालक, लहसुन, प्याज, लौकी, कद्दू, भिण्डी, करेला आदि सब्जियां प्राप्त होती है। इस किचेन गार्डेन से सब्जियों और फल–फूल तो प्राप्त होते ही हैं। बच्चों के ज्ञान में वृद्धि हुयी है वे पौधों व बीजों को पहचान कर उन्हें लगाने में मदद करते हैं। किचेन गार्डेन का यह प्रयोग दूसरे विद्यालयों के लिए अनुकरणीय है।

❖

सौजन्य से
धीरेन्द्र कुमार शर्मा
पू.मा.वि. जन्धेड़ी, वि.ख.–कैराना, जनपद–शामली

जल जीवन मिशन

जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार के पेय जल एवं स्वच्छता विभाग के निर्देशानुसार प्रदेश के समस्त प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों तथा सभी आँगनबाड़ी केन्द्रों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को जल जनित बीमारियों जैसे हैजा, दस्त, टायफाइड, पेचिस और पीलिया आदि से बचाने के लिये 2 अक्टूबर, 2020 से नल से जल उपलब्ध कराने के 'सौ दिन के अभियान' का शुभारम्भ किया गया है।

इस अभियान के अन्तर्गत सौ दिन के अन्दर सभी विद्यालयों एवं आँगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चों को स्वच्छ पेय जल आपूर्ति हेतु नल–जल व्यवस्था, शौचालयों में नल–जल सुविधा तथा मल्टिपल हैंडवाशिंग यूनिट की बच्चों की संख्या के अनुसार व्यवस्था प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध करायी जायेगी।

इस अभियान के प्रारम्भ में ऐसे विद्यालयों एवं आंगनबड़ी केन्द्रों की पहचान की जायेगी जहाँ पर निम्न सुविधायें नहीं है :

(1) पेय जल उपलब्धता हेतु हैण्ड पम्प अथवा सबमर्सिवल पम्प की व्यवस्था नहीं है।
(2) छात्र–छात्राओं के पृथक शौचालयों में रनिंग वाटर (नल–जल) व्यवस्था न होना।
(3) मल्टिपल हैंड वाशिंग यूनिट छात्रों की संख्या के अनुरूप न होना।

दूसरे ऐसे विद्यालय या आँगनबाड़ी केन्द्र है जहाँ सुविधायें हैं लेकिन क्रियाशील नहीं/ऐसे केन्द्रों में क्रियाशील न होने के कारणों की खोजकर उनको दूर करना।

उपर्युक्त समस्त सुविधाओं को 02 अक्टूबर, 2020 से 100 दिनों के अन्दर अथवा 10 जनवरी, 2021 तक संस्तृप्त करना सुनिश्चित किया जायेगा।

❖

कोरोना काल में मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था

प्रथम चरण

कोविड–19 महामारी की स्थिति में सरकार के सराहनीय प्रयास से मध्यान्ह भोजन प्राधिकरण द्वारा मध्यान्ह भोजन योजना से आच्छादित विद्यालयों में अध्ययनरत 1,81,93,664 (एक करोड़ इकक्यासी लाख तिरानब्बे हजार छैः सौ चौसठ) छात्र–छात्राओं को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम एवं मध्यान्ह भोजन नियमावली–2015 के अन्तर्गत लॉकडाउन एवं ग्रीष्मावकाश के दौरान कुल रू0 85,59,53,600/– (रू0 पच्चासी करोड़ उनसठ लाख तिरपन हजार छैः सौ मात्र) परिवर्तन लागत के रूप में सीधे छात्रों के अभिभावकों के बैंक खाते में भेजा गया। इसी प्रकार कुल 160079.408 मी0टन खाद्यान्न कोटेदारों के माध्यम से छात्र–छात्राओं के संरक्षकों को वितरित किया गया था।

द्वितीय चरण

द्वितीय चरण में मध्यान्ह भोजन योजना से आच्छादित विद्यालयों में अध्ययनरत 1,81,93,664 (एक करोड़ इकक्यासी लाख तिरानब्बे हजार छैः सौ चौसठ) छात्र–छात्राओं को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के अर्न्तगत मध्यान्ह भोजन योजना के द्वितीय चरण में प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के लिए कुल 1 जुलाई, 2020 से 31 अगस्त, 2020 की अवधि के लिए कुल 49 दिवस हेतु प्रति छात्र कुल 4.9 किलो ग्राम खाद्यान्य तथा 243.50 की धनराशि उनके खाते में भेजी जा रही है। उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के पोषण के लिए एक 01 जुलाई, 2020 से 31 अगस्त, 2020 की अवधि के लिए कुल 49 दिवस हेतु प्रति छात्र कुल 7.35 किलो ग्राम खाद्यान्य तथा 365 रू. की धनराशि उनके अभिभावकों के खाते में उपलब्ध कराई जा रही है।

❖

विद्यालय खुलने पर करोना से बचाव हेतु सुझाव

- मध्यान्ह भोजन योजनान्तर्गत छात्रों हेतु भोजन पकाने वाले रसोइयों की कोविड–19 जांच निगेटिव होने पर ही कार्य करने की अनुमति प्रदान की जाय तथा रसोइयों से उनके एवं उनके परिवार के सदस्यों के उचित स्वास्थ्य सम्बन्धी स्वयं की घोषणा एवं शपथ–पत्र प्राप्त किया जाय।
- रसोइयों की विद्यालय में अनिवार्य रूप से थर्मल स्कैनिंग एवं हाथों को सैनिटाइज कराने के उपरान्त ही प्रवेश दिया जायेगा। साथ ही उन्हें हर क्षण मास्क का सही ढंग से उपयोग किया जाना होगा।
- रसोइया प्रतिदिन साफ एवं धुले कपड़े पहन कर ही स्कूल आयेगी।
- विद्यालय में प्रवेश करने पर हाथों को साबुन से 40 सेकण्ड तक धोया जायेगा। साथ ही किसी प्रकार के आभूषण को हाथों में नहीं पहना जायेगा।
- रसोइयों द्वारा रसोईघर एवं प्रयोग किये जाने वाले बर्तनों की भोजन पकाने से पूर्व तथा भोजन वितरण के पश्चात् अच्छी तरह से सफाई की जायेगी तथा प्रत्येक स्तर पर स्वच्छता सम्बन्धी सावधानी बरती जायेगी।
- विद्यालय पर पूर्व से रखे खाद्यान्न एवं भोज्य पदार्थों को इस्तेमाल से पूर्व चेक किया जायेगा। साथ ही नवीन क्रय किये गये खाद्य पदार्थों को प्रयोग किये जाने से पूर्व अच्छे से साफ किया जायेगा।
- रसोइयों द्वारा छात्रों को भोजन वितरण करने से पूर्व साफ स्थल पर तथा निश्चित दूरी पर बैठाकर ही भोजन परोसा जायेगा।
- छात्रों के भोजन ग्रहण करने से पूर्व एवं उपरान्त एक निश्चित दूरी पर पंक्तिबद्ध उनके हाथ धुलवाये जायेंगे।
- छात्रों द्वारा भोजन ग्रहण करते वक्त अपने मास्क कहीं उतारकार नहीं रखे जायँ, अपितु छात्र अपना मास्क अपने साथ ही रखें तथा भोजन ग्रहण करने के उपरान्त उसे तुरन्त लगा लें।
- भोजन पकाने की प्रक्रिया में एकत्रित हुये कूड़े को ढक्कनदार डस्टबिन में ही फेंका जाय तथा पानी की निकासी की भी सुदृढ़ व्यवस्था की जाय।
- धोये गये बर्तनों को धूप में सुखाकर ही रसोईघर में रखा जाय। भोजन पकाने में इस्तेमाल किये गये कपड़े, एप्रन, हैंडकवर, पोंछा आदि को भी साबुन से धोकर धूप में सुखाया जाय।

❖

समावेशी शिक्षा–एक प्रयास

शिक्षा प्रत्येक बच्चे के लिए महत्वपूर्ण है। यह एक अच्छा, खुशहाल एवं स्वस्थ जीवन जीने में मदद करती है। इसलिए बच्चे को अच्छी शिक्षा प्रदान करना प्रत्येक माता–पिता का सपना होता है, परन्तु कुछ बच्चे ऐसे होते हैं, जिनकी सीखने की गति, शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास की प्रक्रिया अन्य बच्चों की तुलना में धीमी या कम होती है। इस प्रकार के बच्चे समाज से सामंजस्य बैठाने और दैनिक जीवन से जुड़े कार्यों को करने में सामान्य बच्चों के समान सक्षम नहीं होते हैं। वे अपनी समस्त इंद्रियों का प्रयोग करने में सहज नहीं होते हैं या इंद्रियों के प्रयोग हेतु संघर्षरत रहते हैं। ऐसी परिस्थितियों में इन बच्चों को शिक्षा से वंचित रखने के स्थान पर इस प्रकार के पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे वे अपने रोज़मर्रा के कार्यों को आसानी से कर सकने में सक्षम हों, स्वावलंबी बन सके तथा उनमें व्यवसायिक दक्षता का भी विकास किया जा सके।

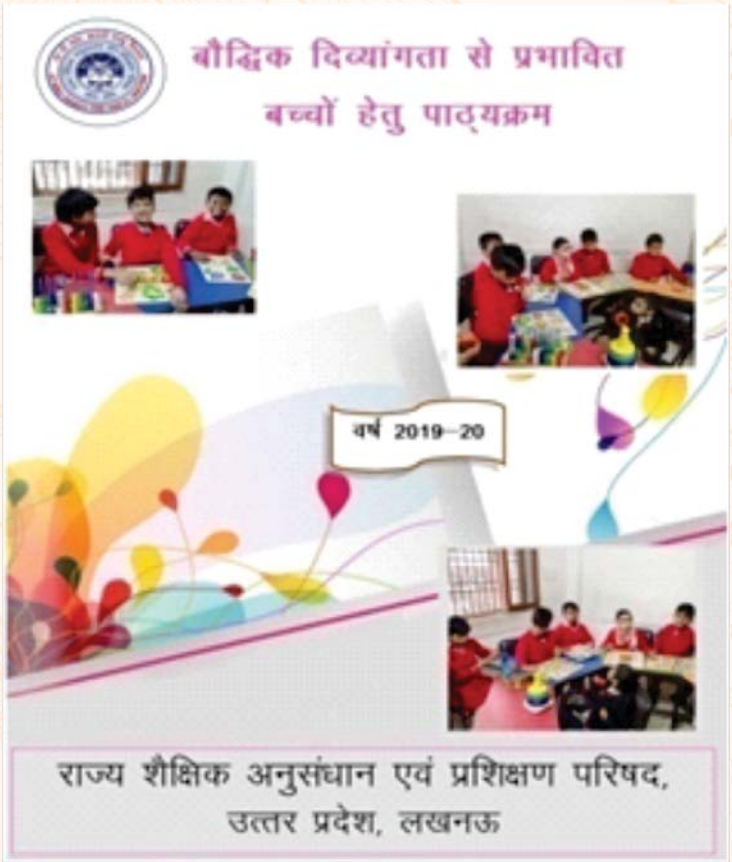

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में बौद्धिक दिव्यांगता से प्रभावित बच्चों के लिए इस पाठ्यक्रम का विशेष रूप से विकास किया गया है। इस पाठ्यक्रम का विकास विशेषज्ञों की सहायता से कराया गया। इस पाठ्यक्रम के विकास में डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ के विशेषज्ञों के साथ–साथ इस क्षेत्र में कार्य कर रही संस्थाओं एवं विद्यालयों के शिक्षकों का सहयोग लिया गया है। पाठ्यक्रम में बौद्धिक दिव्यांगता क्या है? इसके लक्षण क्या हैं? बौद्धिक दिव्यांग बच्चों को किस प्रकार क्या–क्या सिखाया जाए? उनसे किस तरह का व्यवहार किया जाए? आदि का विस्तार से उल्लेख किया गया है। पाठ्यक्रम विकास से जुड़े विशेषज्ञों का यह मत है कि ऐसे विशेष बच्चों के लिए कक्षा में एक शैडो टीचर होना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि कक्षा को व्यवस्थित रखने के लिए एक सामान्य अध्यापक/अध्यापिका जहाँ सभी बच्चों को पाठ्यक्रम के अनुरूप पढ़ायेंगे वहाँ शैडो टीचर विशेष बच्चों के सहयोगी के रूप में कार्य करेंगे। विद्यालय में एक रिसोर्स रूम (संसाधन कक्ष) भी बहुत आवश्यक है, जिसमें विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ हों जैसे–वाइस थैरेपी बॉल, ट्रैम्पोलीन, संगीत के वाद्य यंत्र, पजल्स इत्यादि जिससे विशेष बच्चे अशांत हों, अतिसक्रियता से ग्रस्त हों, कक्षा में लम्बे समय से रहने पर ऊब रहें हों, तो उनका मन बहलाकर पुनः कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं से जोड़ा जा सके। पाठ्यक्रम बच्चे के बौद्धिक स्तर तथा उसकी क्षमता के अनुरूप हो। पाठ्यक्रम के संप्रेषण (Curriculum Transaction) का तरीका बहुत ही साधारण व सरल होना चाहिए। बौद्धिक दिव्यांग बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए कक्षा 1 से 5 का पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। पाठ्यक्रम के विकास में कौशल और दक्षताओं को ध्यान में रखा गया है, जो कक्षा 1 से 5 के स्तर के लिए अपेक्षित है। पाठ्यक्रम में भाषा (हिन्दी और अंग्रेजी), गणित एवं पर्यावरण अध्ययन विषय को लिया गया है क्योंकि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। दैनिक जीवन में गणित की उपयोगिता तथा बच्चों को उनके परिवेश से जोड़ने के

उद्देश्य से गणित व पर्यावरण अध्ययन को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।

यद्यपि इस पाठ्यक्रम द्वारा शिक्षक को एक दिशा देने का प्रयास किया गया है, तथापि शिक्षक को बच्चे की क्षमता, विशेष आवश्यकता, रुचि, व्यवहार एवं सीखने की गति को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक बच्चे के विकास हेतु व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (Individual Educational Plan) बनानी होगी तथा धैर्य एवं बच्चे के साथ आत्मीयता का भाव रखते हुए उसका क्रियान्वयन करना होगा। तभी शिक्षक पाठ्यक्रमीय उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे। पाठ्यक्रम में निम्नवत् विषयवस्तु को समाहित किया गया है–

भाग 1– बौद्धिक दिव्यांगता से प्रभावित बच्चों की पहचान

भाग 2– शिक्षण योजना

भाग 3– अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए निर्देश

भाग 4– उद्देश्य एवं शैक्षणिक प्रक्रिया

भाग 5– विषयवार पाठ्यक्रम–हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, पर्यावरण अध्ययन

इसके साथ ही पाठ्यक्रम में परिशिष्ट के अन्तर्गत व्यवहार मूल्यांकन मापदण्ड बेसिक–एम.आर. कौशल व्यवहार भाग–अ एवं व्यवहार मूल्यांकन मापदण्ड बेसिक समस्या व्यवहार भाग–ब सम्बन्धी प्रपत्र बच्चों के व्यवहार आकलन हेतु जोड़े गये हैं।

विशेषज्ञों की राय से बौद्धिक दिव्यांगता से प्रभावित बच्चों हेतु प्राथमिक स्तर का पाठ्यक्रम इस उद्देश्य से तैयार किया गया है कि बौद्धिक दिव्यांगता से प्रभावित कोई भी बच्चा शिक्षा की मुख्य धारा में जुड़ने से वंचित न रह जाये। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षक बौद्धिक दिव्यांगता से प्रभावित, अल्प मानसिक मंदता से प्रभावित, स्वलीनता, ए.डी.एच.डी. (Attention Deficit Hyperactivity Disorder) एवं अधिगम अक्षमता (Specific Learning Disorder) वाले बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ने में सफल होंगे। पाठ्यक्रम में इस प्रकार के बच्चों की पहचान, उनके लिए उपयोगी शिक्षण विधियों, अपेक्षित आवश्यक कौशलों और दक्षताओं तथा मूल्यांकन का समावेश किया गया है।

इस पाठ्यक्रम द्वारा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य विद्यालय में पढ़ने एवं अन्य बच्चों के साथ गतिविधियों में शामिल करने से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का विकास बेहतर होगा। पाठ्यक्रम इस प्रकार के बच्चों में अपेक्षित आवश्यक जीवन कौशल का विकास कर सकेगा, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। साथ ही शिक्षक इस पाठ्यक्रम की सहायता से बौद्धिक दिव्यांगता से प्रभावित बच्चों में निहित विशिष्ट गुणों की पहचान कर उनका विकास करने में सफल हो सकेंगे।

उक्त पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन के साथ–साथ ऐसे बच्चों के समग्र विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किये जायें, जिससे जब विशेष बच्चे प्रवेश लें, तो उनके प्रति समाज एवं शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक हो क्योंकि ऐसे बच्चों के साथ कार्य करने के लिए उनकी क्षमताओं को विकसित करना एवं अक्षमताओं को नकारना होगा।

❖

एस.सी.ई.आर.टी.
उ.प्र., लखनऊ

पूर्व प्राथमिक स्तर (3-6 वय-वर्ग) हेतु पाठक्रम का विकास

मनुष्य में 'सीखने की प्रवृत्ति' जन्मजात होती है, जो उसके पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक वातावरण पर निर्भर करती है। न्यूरो साइंस भी विभिन्न शोध के आधार पर यह बताता है कि प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के मस्तिष्क का विकास तेजी से होता है। बच्चे में प्रारम्भिक जीवनकाल में सीखने की प्रवृत्ति एवं गति सबसे तीव्र होती है।

बच्चे के मस्तिक का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष तक की आयु में हो जाता है। अध्ययन निष्कर्षों के अनुसार बच्चों के सीखने की प्रक्रिया जन्म से ही प्रारम्भ हो जाती है, जिसमें प्रारम्भिक 06 वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। अतः बच्चे के उचित विकास के लिए जीवन के प्रारम्भिक छह वर्षों में उचित वातावरण, अच्छी देखभाल, शारीरिक गतिविधियाँ, संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक उत्प्रेरणा अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है और इसका प्रभाव भावी जीवन में सीखने की प्रक्रियाओं एवं गति पर भी पड़ता है। ऐसे में बच्चे के समग्र विकास के लिए उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जाना आवश्यक है। बच्चे की विद्यालय पूर्व शिक्षा के लिए संचालित किये जाने वाले केन्द्रों का प्रबंधन इस प्रकार हो जिसमें बच्चे को आनन्दमयी एवं समुचित देखरेख में स्वयं करके सीखने के भरपूर अवसर मिलें। इस उम्र में बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास तीव्र गति से होता है। साथ ही वे नई–नई चीजों को जानने के लिए उत्सुक नजर आते है। शारीरिक विकास के साथ–साथ वे सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से विकसित और परिपक्व होते जाते हैं, बहुत जल्दी वातावरण में घुल–मिल जाते हैं और धीरे–धीरे अपनी कल्पनाशीलता के द्वारा भूतकाल एवं वर्तमान में आये अनुभवों को संजोने का प्रयास करते हैं।

बाल्यावस्था (3–6) की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखकर पूर्व प्राथमिक शिक्षा के जिस स्वरूप की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है, उसके अनुरूप लगभग सभी प्रगतिशील देशों ने अपने बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था कर दी है।

हमारे देश ने भी इसकी महत्ता को स्वीकार किया है। विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों पर किये गये कतिपय अध्ययन यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं कि जिन बच्चों की शिक्षा देर से शुरू होती है, वे अपने स्कूली शिक्षण के दौरान पिछड़ जाते हैं। यही कारण है कि समय–समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों व शिक्षाविदों द्वारा भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था पर बल दिया गया है। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राफ्ट अभिलेख में भी 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अधिक–से–अधिक विस्तार की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए आयुसंगत पाठ्यक्रम विकास' हेतु संस्तुति की गयी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रारूप में वर्ष 2025 तक 3 से 6 वर्ष की आयु के प्रत्येक बच्चे के लिए निःशुल्क, सुरक्षित, उच्च गुणवत्तापूर्ण, विकासात्मक स्तर के अनुरूप देखभाल और शिक्षा की पहुँच को सुनिश्चित करने की बात कही गयी है। इस दिशा में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश द्वारा पूर्व प्राथमिक स्तर (3 से 6 वय वर्ग के बच्चों) हेतु पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। पाठ्यक्रम में उन सभी क्षेत्रों को लिया गया है, जिससे इस वय वर्ग के बच्चों की रूचियों तथा क्षमताओं, विभिन्नताओं, व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए रोचक एवं विकासात्मक वातावरण का सृजन किया जा सके। साथ ही पाठ्यक्रम बच्चों के सर्वांगीण विकास अर्थात् भाषायी कौशल का विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक विकास संवेगात्मक विकास और रचनात्मक विकास का ससक्त माध्यम बने। इस बात की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम में विभिन्न विकास क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

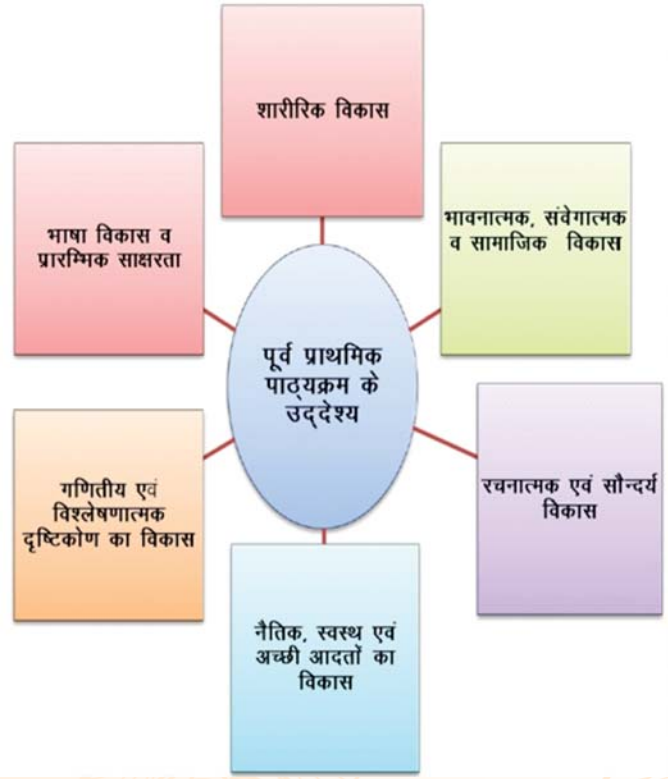

यह पाठ्यक्रम 3 से 6 वय वर्ग के बच्चों के सर्वांगीण विकास के साथ ही उनकी विद्यालय जाने की तैयारी एवं अग्रेतर सीखने के प्रति रुचि एवं तत्परता का विकास करने में सहायक होगा। पूर्व प्राथमिक स्तर (3 से 6 वय वर्ग) हेतु पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम में आयुवार दक्षताओं, सीखने की पद्धतियों/शिक्षण विधियों, शैक्षिक वातावरण के सृजन, शिक्षण अधिगम सामग्री आदि को विस्तार से दिया गया है। तैयार किये गये पूर्व प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम की संरचना 3–6 वय वर्ग के बच्चों के लिए एक लचीली, बहुमुखी, खेल तथा गतिविधि आधारित शिक्षा पर बल देती है।

पाठ्यक्रम में शारीरिक विकास, भाषा विकास व प्रारम्भिक साक्षरता, गणितीय व विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण एवं अच्छी आदतों का विकास, रचनात्मकता तथा भावनात्मक, संवेगात्मक व सामाजिक विकास जैसे बुनियादी उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास किया गया है तथा इसके लिए विभिन्न गतिविधियाँ सुझाव के रूप में दी गयी हैं।

पाठ्यक्रम के 6 भागों में निम्नवत् विषयों को सम्मिलित किया गया है :

पाठ्यक्रम में पूर्व प्राथमिक स्तर पर विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए आवश्यक व्यवस्थाओं को भी स्थान दिया गया है। पाठ्यक्रम में परिशिष्ट के रूप में शिक्षण सम्बन्धी परिणाम (लर्निंग आउटकम्स), आंगनबाड़ी केन्द्रों हेतु सामग्री की सूची तथा आंगनबाड़ी केन्द्रों में करायी

भाग–1	▪ पूर्व प्राथमिक शिक्षा से आशय। ▪ पूर्व प्राथमिक शिक्षा का महत्व। ▪ पूर्व प्राथमिक स्तरीय शिक्षा का लक्ष्य।
भाग–2	▪ पूर्व प्राथमिक स्तर पर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण पहलू।
भाग–3	▪ पूर्व प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम के मार्गदर्शी सिद्धान्त।
भाग–4	▪ पूर्व प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम का उद्देश्य। ▪ उद्देश्यों के अनुरूप विषयवार पाठ्यक्रम। ▪ उद्देश्यों के अनुरूप आयुगत विकास संकेतक।
भाग–5	▪ बच्चे कैसे सीखते हैं ? ▪ सीखने–सिखाने की विधियाँ एवं क्रियाकलाप।
भाग–6	▪ गतिविधियों के क्रियान्वयन की साप्ताहिक/वार्षिक योजना। ▪ आयुगत विकास संकेतक के आधार पर गतिविधि एवं शिक्षण सम्बन्धी परिणाम।

जाने वाली गतिविधियाँ दी गयी हैं। पाठ्यक्रम की भाषा सरल रखी गयी है, जिससे आंगनबाड़ी कार्यकर्ती उनका क्रियान्वयन सरलता से कर सकें।

यह पाठ्यक्रम पूर्व प्राथमिक स्तर पर सीखने के वातावरण का सृजन करने तथा कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले बच्चों की एक सुदृढ़ बुनियाद तैयार करने की दिशा में प्रयास है। इसके माध्यम से शिक्षक इस स्तर पर बच्चों का समग्र विकास करते हुए उनके जीवन को सही दिशा प्रदान करने में सफल होंगे।

❖

एस.सी.ई.आर.टी.
उ.प्र., लखनऊ

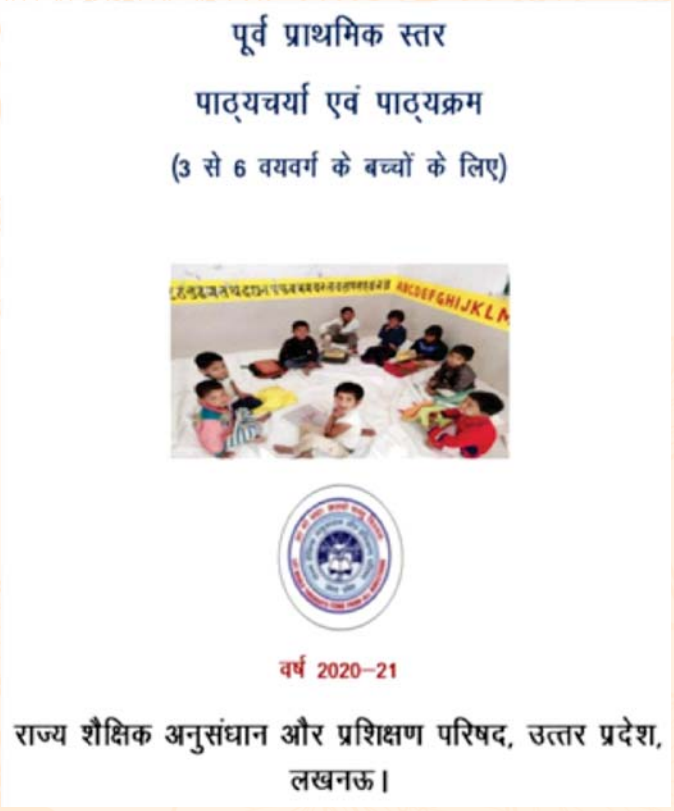

Diksha - One Nation One Digital Platform

DIKSHA is the Sanskrit word for 'Initiation'. In ancient Indian cultures, it referred to a ceremony in which a guru would initiate a student into their teaching. In the modern era, it aptly refers to the technology medium through which teachers can initiate and share knowledge in the digital world. Digital Infrastructure for knowledge Sharing (DIKSHA) has been developed under the supervision of MHRD as the national digital infrastructure for the benefit of teachers, students and learners across the country. It is a unique initiative which leverages existing highly scalable and flexible digital infrastructures, while keeping teachers at the center. It has been declared as part of PM eVidya scheme as One Nation One Digital Platform for school education catering to continued learning of children and training of teachers

As a part of this initiative to make learning more interactive for students, the Government of Uttar Pradesh has come up with QR (Quick Response) Codes in textbooks of English and Hindi medium government-run schools. The content is available for private school students also.

A QR code is a machine readable code resembling black and white squares with a unique alphanumeric code which can be scanned through the DIKSHA app on Android smartphones and used to open web links or other multimedia content **Learn@home made easy by Diksha**

The lock-down has posed a hereto unknown challenge to students, parents, teachers and administrators. States are facing a combination of challenges (current and future). Some have lost one month of new academic year in April, some face challenges of delays in textbook printing and many are hinting at possible late start to school reopening post summer.

Parents are managing children at home without social interactions in place and are worried about loss in learning time. They also struggle in figuring out ways to engage them in new ways at home.

Higher grade students are worried about scoring less in end exams because of loss of school time. Lower grade children are bored at home without friends and want to have some activity to engage them for fun (and learning)

Current circumstances have created anxiety and doubts in the minds of all parties involved on continued learning of the child

Going digital has these advantages :

- Will ensure continuity of learning of the child while at home
- Will help administration do a pulse check by quickly leveraging data
- Can quickly package and make available bite sized learning and remediation material

Benefits of using Diksha for learning at home :

- Make learning a habit for child using Diksha
- Child can learn topics in textbooks, using digital content approved by the education department
- Helps child revise and understand the topics better

Diksha coverage in UP

DIKSHA in UP

62 textbooks covered across 2 mediums	~1400 QR codes with 3400 content pieces	~61.6 lakh content plays since Jan '20
12 online courses launched for KGBV teachers	30+online courses launched for teachers	2 lakh enrolments (non unique) 96000 completion

Teacher Professional Development

Teacher Professional Development (TPD) is one of the verticals of Diksha. TPD is intrinsically aligned with the goal of educating teachers continuously through their service period in order to enhance teaching and learning outcomes as well as drive improvements in the classroom environment and promote school leadership. Online training entails many benefits such as 24x7 access on the smartphone, consistent training delivery from experts, State developed custom content for teachers, pre and post assessment on training, live dashboards with actionable insights as well as significant reduction in training costs.

Teacher Professional Development is a journey which consists of high quality training based on curriculum and pedagogy delivered through Diksha to enable 24x7 access and a consistent learning experience to teachers.

TPD was launched in UP with a small set of courses during the second week of April in order to keep all teachers connected and engaged in the teaching and learning process through self development. As of May 26th, more than 5.1 lakh enrollments have happened with a completion of over 45%, which is one of the highest for any online platform.

The content on Diksha, as a part of the Teacher Professional Development is interactive, highly engaging and has been curated by the department.

Every child has a right to education, with Diksha we aim to provide education to every section of society and One Nation One Digital Platform.

❖

Role of E-learning & Networking in Teacher Education

E-learning is replacing the century's old model of teaching and learning, which focuses on an instructor standing in front of a classroom lecturing to students. This model no longer fits the way people want to learn today, because of technological world in which they live. With the rapid advances in technology and Internet tools, the traditional model is fading away to accommodate today's learners. Traditional teaching is being replaced by an evolving e-learning model which uses online technology to allow people to learn anytime and anywhere. This model includes work place training, the delivery of just-in-time information, college courses, continuing education units, and guidance from experts. The advantages of e-learning include:

- Actively engaging students in the learning of process, as opposed to being passive learners.
- Supporting interactivity between a student and instructor, along with fellow students.

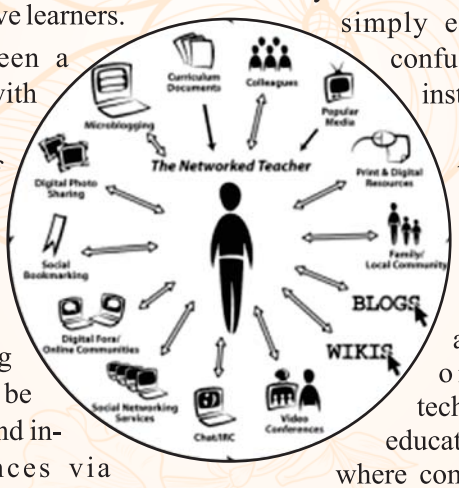

E-learning comprises all forms of electronically supported learning and teaching. The information and communication systems, whether networked learning or not, serve as specific media to implement the learning process. The term will still most likely be utilized to reference out-of-classroom and in-classroom educational experiences via technology, even as advances continue in regard to devices and curriculum.

E-learning is essentially the computer and network-enabled transfer of skills and knowledge. E-learning applications and processes include Web-based learning, computer-based learning, virtual education opportunities and digital collaboration. Content is delivered via the Internet, intranet/extranet, audio or video tape, satellite TV, and CD-ROM. It can be self-paced or instructor-led and includes media in the form of text, image, animation, streaming video and audio.

E-learning is naturally suited to distance learning and flexible learning, but can also be used in conjunction with face-to-face teaching, in which case the term Blended learning is commonly used. E-Learning pioneer Bernard Luskin argues that the "E" must be understood to have broad meaning if e-Learning is to be effective. Luskin says that the "e" should be interpreted to mean exciting, energetic, enthusiastic, emotional, extended, excellent, and educational in addition to "electronic" that is a traditional national interpretation.

The recent trend in the E-Learning sector is screen casting. There are many screen casting tools available but the latest buzz is all about the web based screen casting tools which allow the users to create screen casts directly from their browser and make the video available online so that the viewers can stream the video directly. The advantage of such tools is that it gives the presenter the ability to show his ideas and flow of thoughts rather than simply explain them, which may be more confusing when delivered via simple text instructions.

The emerging social networking tools that are ready to incorporate in educational settings and their popularity among younger generations make them compelling applications for higher education faculty. The interest and growth in social networking do not only represent new emerging technologies that may possibly be used in education, but they also refer to the networks where communication and interaction affect the way we know and learn things.

For technology to be used in powerful and transformative ways, however, a Certain set of conditions must prevail. Professional development is a Systemic issue and its effectiveness may require structural changes or reforms. Finally, teacher training institutions, professional development schools, Professional societies and public educational agencies must continue to Identify, study and disseminate examples of effective technology Integration that answers professional development needs.

❖

Mrs. Bharti
Khatri (M.sc., M.ed., M.phill)
(A.T.) JHS Fatehpur
Makrandpur, Sikandrabad, Bulandshahr

कम्यूनिटी लर्निंग प्वाइण्ट और हमने सीखा कार्यक्रम

राखाराम गुप्ता जी का कम्यूनिटी लर्निंग प्वाइण्ट :

राज्य आई.सी.टी. पुरस्कार प्राप्त शिक्षक श्री राखाराम गुप्ता द्वारा लम्बरदारपुरवा में ग्राम वासियों के सहायोग से प्रतिदिन सायं 06:00 बजे 08:00 बजे तक निःशुल्क कम्यूनिटी लर्निंग प्वाइण्ट संचालित किया जाता है, जो पूर्णतयः डिजिटल तकनीक पर आधारित है, जिसमें प्रोजेक्टर के माध्यम से बड़ी स्क्रीन पर वीडियो प्ले करके दिखाया जाता है। शिक्षक श्री राखाराम द्वारा बताया गया कि तमाम कोशिशों और स्कूली छात्रों के माध्यम से कुछ लोगों से बातचीत की तो ग्रामवासियों के द्वारा सहयोग मिला और ग्राम में ही पाठशाला की शुरूआत हुयी। जिसे कम्युनिटी लर्निंग प्वाइण्ट नाम दिया गया है। यह पाठशाला गांव के मध्य सायं संचालित होने के कारण बच्चे, माता–पिता व अभिभावक आसानी से आ जाते हैं। यहां बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते हैं, जिसमें परिषदीय विद्यालयों के बच्चों के साथ–साथ कान्वेंट के बच्चे भी शामिल रहते हैं। बच्चों को पाठ्यक्रम के साथ–साथ संचारी रोग, धूम्रपान–निषेध, स्वच्छता, बेटी–बचाओ, बेटी–पढ़ाओ आदि के साथ सरकारी योजनाओं को वीडियो के माध्यम से दिखा कर प्रेरित किया जाता है। कम्यूनिटी लर्निंग प्वाइण्ट में बच्चों के साथ–साथ अभिभावक स्वतन्त्र भाव से सीखते हुये लाभान्वित हो रहे हैं।

''हमने सीखा'' :

हमने सीखा कार्यक्रम श्री राखाराम गुप्ता, सहायक अध्यापक द्वारा विकसित किया गया है, जिसे जनपद के समस्त परिषदीय विद्यालयों में दिनांक 01 जुलाई, 2019 से लागू किया जा चुका है। इस कार्यक्रम से बच्चों में शैक्षिक गुणवत्ता का स्तर बढ़ा है।

श्री गुप्ता का कहना है कि प्रायः देखा जाता है कि विद्यालय में शिक्षक दिन भर बच्चों को विभिन्न शिक्षण विधाओं व गतिविधियों के माध्यम से अधिगम कराते हैं, परन्तु जब हम दूसरे दिन उन्हीं बच्चों से उसी पाठ्य–वस्तु के संदर्भ में कुछ सामान्य प्रश्न पूछते हैं, तो समस्त बच्चे हमें संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाते हैं। बच्चों द्वारा अधिगमित पाठ्–वस्तु को उनकी स्मृति में कैसे स्थायी बनाया जाय, इस विषय पर व्यापक मंथन के बाद एक छोटा सा उपाय मुझे समझ में आया कि क्यों न प्रतिदिन बच्चों को जो पाठ्य–वस्तु पढ़ायी जाती हैं, उसी से सम्बन्धित कुछ अनिवार्य व आवश्यक जानकारी उन्हीं से प्राप्त कर, समझकर एक चार्ट पेपर पर बच्चों के सहयोग से तैयार करवायी जाये। पढ़ाई गयी विषयवस्तु को लेकर ''हमने सीखा'' की अनुभूति कराने का प्रयास करते हुये पुनरावृत्ति करायी जाय और बच्चे मूलभूत पाठ्य–वस्तु का अधिगम कर लें। बच्चे प्रकरण पर अपनी समझ विकसित करते हुये ज्ञान को स्थायी कर सकें।

इस गतिविधि का सबसे बड़ा लाभ यह है कि नित्यप्रति, सीखी गयी विषयवस्तु उन बच्चों को आंखों के सामने घूमती रहती है। इस प्रकार उस विषयवस्तु पर एक स्थायी व उनके मन–मस्तिष्क में घर कर जाने वाला ज्ञान प्राप्त होता है। ''हमने सीखा'' कार्यक्रम हेतु तैयार किये गये चार्ट पेपर पर बच्चों के अनुभवों को भी शिक्षण के माध्यम से अभिव्यक्ति का

अवसर दिया जाता है। वैसे भी सीखने की प्रक्रिया तभी सफल मानी जाती है, जब अधिगमकर्ता स्वयं अथवा दूसरों के अनुभवों को अपनाकर, अपना व्यवहार परिवर्तित कर सके और अधिगमित विषयवस्तु पर त्वरित प्रक्रिया व्यक्त कर सके। ''हमने सीखा'' कार्यक्रम इसी तथ्य का प्रमाण है, जो इसे प्रमाणित करता है।

अध्यापक अपने कक्षा में सभी बच्चों को एकत्रित करके उन्हें पूरे दिन में पढ़ाये गये विभिन्न पाठों के कठिन व अनिवार्य विषय सम्बन्धी पुनरावृत्ति प्रश्न पूछता है। चूंकि पहले ही कक्षा में ऐसे प्रश्न पूछे गये थे, तो जो बच्चा उस प्रश्न का उत्तर जानता है, वह तुरन्त उत्तर देता है, परन्तु जो बच्चा नहीं जानता है, वह शान्त चित्त होकर देखता रहता है। ऐसे में अध्यापक उन्हीं शान्त चित्त वाले बच्चों को प्रोत्साहित करते हुये बच्चों के मन–मस्तिष्क में सीखी गयी विषयवस्तु को एक रंगीन चार्ट पेपर पर मार्कर के माध्यम से लिखवाता है। इसी प्रकार यह प्रक्रिया लगभग 30 मिनट तक चलती है। बच्चों को रूचि व पसन्द के आधार पर अन्य विषयवस्तुओं को जोड़ते हुऐ एक ''हमने सीखा'' चार्ट पेपर तैयार किया जाता है, जिसमें बच्चों द्वारा सीखी गयी कुछ अनिवार्य विषयवस्तु समाहित रहती है। हमने सीखा चार्ट को तैयार करने में उन बच्चों का विशेष ध्यान रखा जाता है, जो बच्चे सीखने में थोड़ा–सा कमजोर होते हैं। उनका प्रोत्साहन अनिवार्य है। जब ''हमने सीखा'' चार्ट तैयार हो जाता है, तो एक बार पुनः उसका वाचन इन्हीं बच्चों के माध्यम से करवाते हैं। कक्षा में इस गतिविधि के लिये बच्चों को उत्तरदायी बनाया जाये, क्योंकि बच्चों के मानस पटल पर विषयवस्तु के बारे में सीखी गयी जानकारी को ही ''हमने सीखा'' चार्ट में बच्चों के समन्वय से तैयार किया जाता है। बच्चे आसानी से ''हमने

सीखा'' के सम्पूर्ण विषयवस्तु को सरलतापूर्वक तैयार कराते हैं। इस प्रकार तैयार किये गये चार्ट पेपर को विद्यालय के शिक्षण कक्ष में ''हमने सीखा'' पर चस्पा किया जाता है। चस्पा करते समय भी बच्चों से ''हमने सीखा'' चार्ट पर लिखित विषयवस्तु का वाचन करवाया जाता है।

हमने सीखा चार्ट में लिखित विषयवस्तु के संदर्भ में जब बच्चों को ''हमने सीखा'' की अनुभूति/स्वीकृति प्राप्त हो जाये तब शिक्षक और बच्चे मिलकर ''हमने सीखा दीवार'' बनाते हैं, जिस पर ''हमने सीखा'' से प्राप्त विषयवस्तु/पाठ्य सामग्री को चार्ट पेपर के रूप में प्रतिदिन तिथिवार चस्पा करते हैं। ''हमने सीखा दीवार'' कक्षाकक्ष में हमेशा बच्चों को ''हमने सीखा'' की अनुभूति/स्वीकृति प्रदान कराता रहता है। चूंकि इस पाठ्यवस्तु/सामग्री को बच्चों के द्वारा तैयार किया गया है, इसलिये बच्चों को ऐसा प्रतीत होता है कि कक्षा में सम्पूर्ण सामग्री हम सभी के द्वारा तैयार की गयी है। वे सभी विषयवस्तु के प्रति सम्पूर्ण जानकारी रखते हैं। इससे बच्चों का विषयवस्तु के साथ हमेशा एक जुड़ाव बना रहता है और विषय के प्रति ज्ञान स्थायी रूप से आत्मसात होता रहता है।

इस नवाचार को गोण्डा जनपद के समस्त प्राथमिक विद्यालयों में लागू किया गया है। इस गतिविधि से बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। उनके स्तरीय ज्ञान में वृद्धि देखी जा रही है।

❖

राखाराम गुप्ता
सहायक अध्यापक,
प्रा.वि. बकौली पुरवा
ब्लॉक–बेलसर, जनपद–गोण्डा

लीप (छलांग)

(Learning evaluation and Augmentation. Pass Book)

श्री कृष्ण मुरारी उपाध्याय जनपद ललितपुर, विकास खण्ड महरौली के प्राथमिक विद्यालय पठा–2 में कार्यरत हैं। उनका कहना है कि वर्ष 2014 तमाम प्रयासों के बावजूद बच्चों के सीखने के स्तर में सुधार न होने की आकुलता ने कुछ नया सोचने को विवश कर दिया इसके परिणामस्वरूप मेरे मन में **'नॉलेज बैंक पासबुक'** के विचार ने जन्म लिया। यह मेरे पूरे शैक्षिक जीवन के अनुभव का निचोड़ था। अपने विचार को साथियों के साथ साझा किया और धरातल पर उतारने का निर्णय लिया। जनवरी 2015 में नॉलेज बैंक पासबुक को कक्षा 6 के लिए प्रिंट कराया और अपने विद्यालय उच्च प्राथमिक विद्यालय पठा, ब्लाक महरौनी जनपद ललितपुर में लागू कर दिया। बच्चों की सहभागिता और उत्साह से हमें बहुत खुशी हुई। अप्रैल 2015 में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र अक्षय उपाध्याय ने इस नवाचार को और बेहतर बनाने के लिए सहयोग किया। उन्होंने इसे व्यवस्थित बनाने और नया रूप देने की योजना बनाई। अक्षय उपाध्याय रेजदाईवॉयस संस्था के फाउंडर हैं तथा प्रोजेक्ट लीप के निदेशक के रूप में वर्तमान समय में कार्य कर रहे हैं। हमने एक बड़े समूह (जिसमें शिक्षक तथा अन्य शामिल थे) के साथ विचार विमर्श करते हुए कार्य प्रारंभ किया। मार्च 2015 में यह नवाचार LEAP (Learning Evaluation and Augmentation Passbook) का नया रुप में हमारे सामने था। NCERT New Delhi ने 2017 में इस पर एक दस्तावेज बनाया। मार्च 2017 में मुझे यह लगने लगा था कि अब लीप SMART कार्यक्रम के रूप में विकसित हो गया है। हमने इसकी सूचना राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद उत्तर प्रदेश को दी। यह नवाचार व्यवस्थित ऑकलन योग्य, लक्ष्य प्राप्ति, वास्तविकता आधारित समयबद्ध कार्यक्रम है।

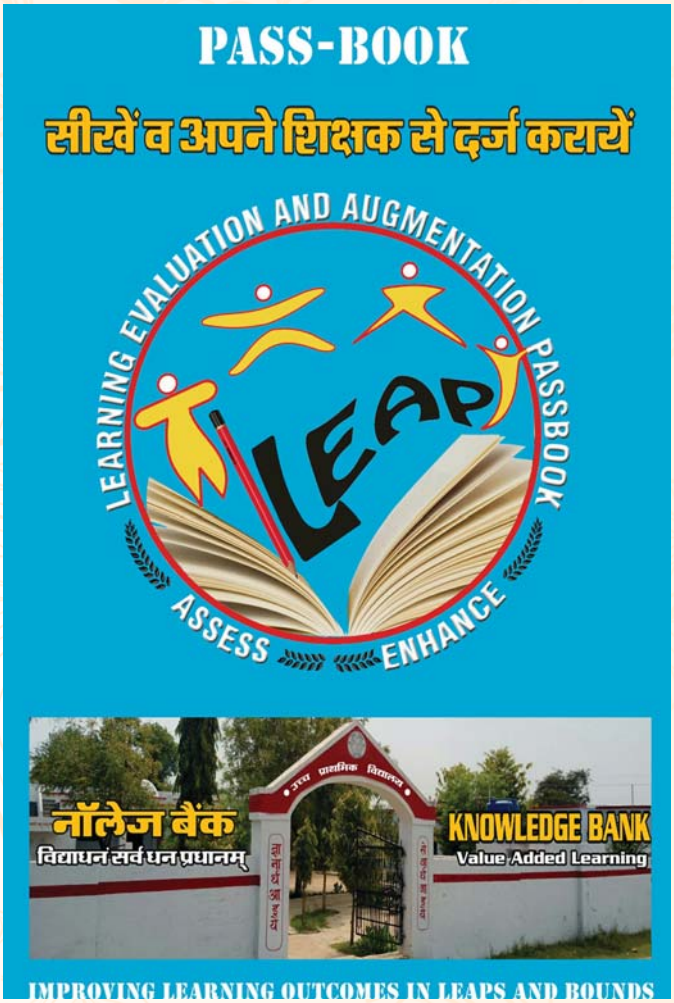

सत्र 2019–20 के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद उत्तर प्रदेश लखनऊ के द्वारा सात जनपद के 200 स्कूलों में इस कार्यक्रम को लागू करने का आदेश निर्गत कर दिया गया। अब तक हम अपने संसाधनों से जिसमें साथियों का स्वयं का अंशदान एवं विशेष सहयोगी श्री संजीव वंदना सिरोटिया टैक्सास संयुक्त राज्य अमेरिका के योगदान से इस कार्यक्रम को चलाते रहे। इस साल टाटा ट्रस्ट की ओर से इसकी सामग्री को प्रिंट कराने की जिम्मेदारी लेने का प्रस्ताव मिला। सामग्री तैयार होने के बाद हमने शिक्षकों के प्रशिक्षण सम्पन्न कराए और सामग्री वितरित की। इस वर्ष संजीव वंदना सिरोटिया के पुत्र सार्थक ने स्वयंसेवक के रूप में प्रोजेक्ट लीप का एक एप बनाया है।

लीप क्या और कैसे ?

हमारे शास्त्रों में कहा गया है,

'न चोरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातभाज्यं, न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धते एव नित्यं, विद्या धनम् सर्व धन प्रधानम्।।'

जब विद्या को धन कहा गया है तो विद्यालय इस धन के संरक्षण और समावेशन का स्थान होने के कारण एक तरह से नॉलेज बैंक है। इसलिए बैंकिंग व्यवस्था की तरह बच्चों के लिए एक पासबुक की परिकल्पना की गई जो बैंक की पासबुक की तरह है परंतु कुछ अलग। बैंक की पासबुक पूरी खाली होती है जबकि लीप पासबुक में वह सभी कौशल क्रमबद्ध रूप से रखे गए हैं जो बच्चे को सीखना है। यह कौशल बुनियादी से लेकर कक्षा–8 स्तर तक के लिए निर्धारित किए गए हैं। इसके निर्धारण में NCERT एवं SCERT UP के द्वारा जारी किए गए दस्तावेज लर्निंग आउटकम्स का पूरा ध्यान रखा गया है।

लीप पासबुक सबसे पहले उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षा छह के लिए तैयार की गई थी। बाद में कक्षा सात और आठ के लिए तैयार की गई। वर्तमान समय में प्राथमिक स्तर की कक्षाओं के लिए इस पर कार्य किया जा रहा है। इसमें कुल

बारह पेज हैं तथा पासबुक की तरह छोटी साइज है जो बच्चों को बहुत पसंद है। इसमें पाठ्यक्रमीय एवं पाठ्य सहगामी दोनों तरह के कौशल रखे गए हैं।

लीप पासबुक में बच्चों के व्यक्तित्व विकास से संबंधित सभी पक्षों को यथोचित स्थान दिया गया है। स्वावलंबन स्वानुशासन और स्वमूल्यांकन के अंतर्गत विविध जीवन कौशल का समावेश किया गया है।

लीप में बच्चे की सहभागिता को पुरस्कृत किया जाता है इसलिए बच्चे स्वयं ही बार–बार सीखने को प्रेरित होकर और सीखकर शिक्षक के पास अपने कार्यों के मूल्यांकन के लिए उपस्थित होते हैं। यह पासबुक बच्चे के अधिकार में रहती है वह जो भी सीखता है उससे संबंधित कौशल के आगे शिक्षक से दर्ज करा लेता है। पासबुक से बच्चे को यह पता होता है कि उसने क्या सीख लिया है, क्या सीख रहा है और उसे क्या सीखना है। पासबुक शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की आवश्यकता

के अनुसार सीखने की प्रक्रिया में सहयोग करने में मदद करती है और अभिभावक को अपने बच्चे की प्रगति से अवगत कराती है।

लीप के साथ बच्चों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया विकसित की गई है। जिसके लिए बच्चों के पूर्व परीक्षण के साथ मासिक प्रगति को दर्ज किया जाता है। यह शिक्षक के लिए तैयार की गई LEAD (Data for Early and Advanced Learners) में रखा जाता है। जिससे किसी भी कक्षा के प्रत्येक बच्चे की सीखने की स्थिति को किसी भी समय जाना जा सकता है।

❖

कृष्ण मुरारी उपाध्याय
प्राथमिक विद्यालय पठा–2
विकास खण्ड, महरौली, जनपद–ललितपुर

कहानियों द्वारा शिक्षण

मैं श्वेता श्रीवास्तव प्राथमिक विद्यालय जैतवारडीह विकास खण्ड–सोरावं जिला प्रयागराज में सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यरत हूँ। विद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने के उपरांत मैंने देखा कि बच्चों की उपस्थिति व शैक्षिक गुणवत्ता बहुत कम थी। बच्चों के वास्तविक अधिगम स्तर और अपेक्षित अधिगम स्तर में बहुत अन्तर था। इस पर गहराई से विचार करने पर मुझे दो कारण समझ में आये–एक तो बच्चों की उपस्थिति कम रहती है और दूसरा कक्षा–कक्ष में जो भी पढ़ाया जाता वह बच्चे समझने में असमर्थ थे। यह एक बहुत बड़ी समस्या थी, जिसका समाधान अति आवश्यक था। इसके लिये मैंने नवीन प्रयोग किया।

सुबह कक्षा में उपस्थिति लेने के बाद जितने बच्चे अनुपस्थित रहते उनके अभिभावकों को फोन करके बच्चों के विद्यालय न आने का कारण पूछती। ऐसा प्रतिदिन करने से मैंने देखा कि फोन से बात करने के आधे घण्टे बाद ही 20–25 प्रतिशत उपस्थिति और बढ़ जाती थी। अभिभावकों में जागरूकता आने लगी कि बच्चों को विद्यालय भेजो, नहीं तो मैडम का फोन आ जायेगा। वे भी अपनी जिम्मेदारी समझने लगे। अभिभावकों से जुड़ाव भी बढ़ने लगा। जिसका मुझे लाकडाउन के समय भी बड़ा लाभ हुआ। इस प्रयोग से बच्चे स्कूल आने लगे और उनकी उपस्थिति अच्छी रहने लगी। अब दूसरी समस्या उनके भाषा ज्ञान को बढ़ाना था। इसके लिये मैंने यह प्रयोग किया। जब तक मैं अभिभावकों से बात करती, तब तक बच्चों का (औसत अधिगम स्तर वाले व औसत से अधिक अधिगम स्तर) एक साथ समूह बनाकर कहानी की सुंदर व चित्रित पुस्तकें पढ़ने को देती। जो पढ़ लेते वो दूसरों को सिखाते। सिखाने वाले बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिये समय–समय पर पुरस्कृत भी किया जाता। इसे देखकर जो बच्चे Slow Learner थे, वे प्रेरित होकर पढ़ने और सीखने लगे। इस प्रकार से एक–दो महीने में 95 प्रतिशत छात्र पुस्तकें पढ़ने लगे। जब उन्हें पढ़ना आने लगा तो रूचि भी बढ़ने लगी। कहानी की पुस्तकों की बच्चों में इतनी उत्सुकता रहती कि उपस्थिति लेने के बाद व पुस्तक माँगने लगते थे। हम उनकी पसन्द की पुस्तकें पढ़ने को देती और बच्चों से ही कहानियां सुनाने का कहती तो वे कभी अपनी क्षेत्रीय भाषा में तो कभी टूटी–फूटी भाषा में कहानियाँ सुनाते थे।

इस प्रकार बच्चों में कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास होने के साथ–साथ नैतिक वह मानवीय मूल्यों का भी विकास हुआ और वे भाषा ज्ञान में निपुण होने लगे।

❖

श्वेता श्रीवास्तव
स.अ., प्रा.वि. जैतवारडीह
विकास खण्ड–सोरावं, जनपद–प्रयागराज

कुन्बा

सलीके से कटी बोनसाई की खूबसूरत झाड़ियों ने पार्क के रास्ते की खूबसूरती को बढ़ा रक्खा था। लोग–बाग उन राहों से गुजरते हुए उस विशालकाय वट वृक्ष को देखने के लिए बड़े मनोयोग से बढ़ते जाते। आते–जाते उस वट वृक्ष के बारे में बात करते हुए फिर उन्ही रास्तों से गुजर जाते। कभी कोई उसकी प्राचीनता की बात करता तो कोई उसकी जड़ों की जटिलता की बात करता। हाँ, कोई–कोई अपनी उलझनों या खुशियों को भी उन राहों पर कहते हुए गुजर जाता। बोनसाई की वो झाड़ियाँ एक दिन आपस में ही अपने अस्तित्व का विचार कर कुछ कटुता और गुरूर के साथ एक दूसरे से कहने लगी–

"इस पार्क की पूरी राह को हमने कितना सौंदर्य दिया है। पर इंसान कितना खुदगर्ज है हमारे बारे में सोचता भी नहीं है।"

दूसरे ने भी हाँ में हाँ मिलाते हुए अपनी उपेक्षा का दर्द साझा किया– "क्या नहीं है आख़िर हमारे पास, हम भी तो हरे–भरे हैं, हम भी प्रकृति को निखारते हैं। वातावरण को शुद्ध रखते हैं।" वह बोनसाई अपने आस–पास के घेरे की माटी से अपना भोजन खींच अलसाया सा हिलकर फिर शांत हो गया। उनकी ये वार्ता एक दूसरे से होते हुए उस वट वृक्ष के कानों से जा टकराई कहा नहीं जा सकता कि किस टहनी या किस शाखा ने ये बात सुनी पर समझी उस विशालकाय वृक्ष के एक–एक पत्ते ने। सब हिल–हिल करके उनकी बात का जवाब देना ही चाह रहे थे कि सभी जड़ें जो मिल–जुल कर हर शाखा के भरण–पोषण के इंतजाम में लगी थी वे बोली– "ये सच है की हम तक पहुँचने की राह को तुमने खूबसूरत बनाया है। पर क्या नहीं है तुम्हारे पास उसका जवाब मैं देता हूँ। भारतीय संस्कृति का समावेश नहीं है तुम में। तुम विदेशी तरीके से पनपे हो। तुम सब एक ही परिवार के होते हुए भी अलग–अलग रहते हो। सब क़रीब होते हुए भी एक दूसरे से दूर हो।

इंसान का परिवार भी तो अब बोनसाई ही होता जा रहा है। कुन्बा का अर्थ और सुख–खुद भी भूल गया है। शायद वह इसी बिसूरी हुई इंसानी सोच को हम में तलाश खुश होता हो।"

अब उन बौने पेड़ों को अपने बौनेपन में कोई भी सुंदरता नजर न आ रही थी।

❖

ज्योत्सना सिंह
गोमती नगर, लखनऊ

संख्या पहचानने का अनोखा प्रयास

कक्षा–3, 4, 5 तक के छात्र–छात्राओं में यह अक्सर देखा जाता है कि 100 तक के अंक वे आसानी से पहचान और लिख लेते हैं। लेकिन 100 से ऊपर की संख्यायें यदि बीच–बीच में से लिखने को कह दो तो कठिनाई का अनुभव करने लगते हैं। बहुत कोशिश करने के बाद भी कुछ ही बच्चे सीख पाते हैं। कई बार इकाई, दहाई, सैकड़ा और हजार को याद करवाने के बावजूद भी वे भूल जाते हैं कि दहाई का अंक कौन सा होता है, सैकड़ा का अंक कौन सा होता है? आदि। कविता रूपी गतिविधि से छात्र–छात्राओं में हजार तक की संख्याओं को लिखना व पहचानना बहुत आसान हो गया।

यह गतिविधि सभी तरह के विद्यालयों में कक्षा–3 से कक्षा–5 तक के छात्र–छात्राओं के लिये लाभदायक है।

आवश्यक सामग्री– श्यामपट, चॉक, डस्टर आदि सम्बन्धित T-LM- का चार्ट।

क्रियान्वयन– सर्वप्रथम हम बच्चों से मित्रतापूर्वक बात प्रारम्भ करेंगे। साधारण गिनती से प्रारम्भ करके विषय से जोड़ेंगे। फिर हम उन्हें बतायेंगे कि जिस प्रकार छोटी संख्याओं को आसानी से पढ़–लिख सकते हैं उतनी ही आसानी से आप बड़ी संख्याओं को लिखना–पढ़ना सीख जायेंगे। इसके बाद सभी बच्चों को यह कविता याद करवायेंगे।

एक नम्बर पे आई
कहते इसे इकाई
दो नम्बर पे आते ही
बन जाती है दहाई
तीन नम्बर पे वो खड़ा
सौ से बनता सैकड़ा
बच्चों मुझको तुमसे प्यार
4 नम्बर से बने हजार

इस कविता से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक नम्बर पर आने वाले अंक को इकाई कहते हैं, दो नम्बर पर आने वाले अंक को दहाई, तीन नम्बर पर आने वाले अंक को सैकड़ा एवं चार नम्बर पर आने वाले अंक को हजार।

अब श्यामपट पर दायें तरफ से 1, 2, 3, 4 और उसके नीचे इकाई, दहाई, सैकड़ा हजार लिखते हैं–

इस प्रकार

4	3	2	1
हजार	सैकड़ा	दहाई	इकाई
8	9	3	2

अब इसके नीचे कोई भी अंक लिख दीजिये चार नम्बर के नीचे आठ लिखे है और चार का मतलब हजार तो आठ हजार तीन के नीचे 9 लिखे हैं, तीन से सैकड़ा बनता है अतः 9 सौ पड़ेंगे। इस प्रकार यह संख्या हुई आठ हजार नौ सौ बत्तीस। इस प्रकार यह नवाचार बच्चों को संख्याओं के बारे में स्थाई ज्ञान देता है।

❖

गीता शाक्य (प्र.अ.)
प्रा.वि. इलायचीपुर,
लोनी गाजियाबाद

उन्नत होगी शिक्षा

बेसिक में आई नई-नई योजना।
सोमवार को मौसमी फल
बढ़ेगी विटामिन मिलेगा बल।
ड्रेस, बैग, जूता, मोजा
विद्यार्थियों तक निशुल्क पहुँचा।
उत्कृष्ट शिक्षक बनाएगी निष्ठा
बेसिक शिक्षा की बढ़ेगी प्रतिष्ठा।
दीक्षा बताए नए टीएलएम और आर्ट
बच्चे बनेंगे वेरी -वेरी स्मार्ट।
हाजिरी लेगी जब प्रेरणा
गुरूजी को होगी तब देर ना।
शारदा ढूढ़ेगी बच्चे स्कूल से आउट
इल्लिट्रेसी होगी ऑल आउट।
राज्य पुरस्कार करेगा मोटीवेट
गुरूजी होगे एक्टीवेट।
अल्बेंडाजोल आयरन की बटी टेबलेट
बच्चे करेंगे फील वेल सेट।
शगुन करेगा स्कूल का दौरा
गुणवत्ता का देगा सारा ब्यौरा।
महिलाओं बच्चों को मिलेगा पोषण
स्वस्थ बनेंगे न होगा कुपोषण।
बेसिक में ऑपरेशन कायाकल्प
विद्यालयी भवनों को करेगा स्कल्प।
अंधकार मिटेगा बटेंगी सोलर लैम्प
रोशनी में पढेंगे बनेंगे चैम्प।
सरकार का है ऐसा जतन
सुधरे प्राथमिक में पाठन-पठन।
इन योजनाओं से यही विचार,
सुधरे शिक्षा, मिटे भ्रष्टाचार।

❖

लेखिका
मीनाक्षी पाल (विज्ञान अध्यापिका)
पू.मा.वि. भोजपुरा, मैनपुरी

ग़ज़लें

(1)

न वो अंजुम है, न वो शम्स ओ क़मर जैसा है,
आसमाँ उसके लिये राह गुज़र जैसा है।
चूर हो जायेगा हर क़तरए शबनम का गुरूर,
चंद लम्हों के लिये जो कि गुहर जैसा है।
तू करम कर दे, तो हो जाये गुले-तर जैसा,
दिल का हर ज़ख़्म मेरे दोस्त शरर जैसा हैं।
इस सलीके से वो चलता है कि ठोकर न लगे,
है तो नाबीना, मगर अहले नज़र जैसा है॥
अब सभी अम्न की करते हैं दुआऐं "खुश्तर"
यानी एहसास उधर का भी इधर जैसा है।

(2)

शीशे की तरह है न वो पत्थर की तरह है,
इस दौर में इस दौर के रहबर की तरह है।
दिल तंग न कर मेरी तरफ देखने वाले,
कशकोल फ़क़ीरों का समन्दर की तरह है।
रहगीर इसे मील का पत्थर न समझ लें,
बैठा जो तेरी राह में पत्थर की तरह है।
तड़पाने लगी याद तेरी आके मेरा दिल,
अये यार तेरी याद तो नश्तर की तरह है।
दस्तार मेरे सर पे बंधा है जो सुख़न का,
रूमाल के जैसा है न चादर की तरह है।
कहते हुए हमने ये मुख़ालिफ़ से सुना है,
कोई नहीं अब शहर में "खुश्तर" की तरह है।

❖

खुश्तर रहमान खाँ
प्रभारी प्रधानाध्यापक
संविलित विद्यालय देना परसेण्डी, जनपद–सीतापुर

सुर्ख़ियों में बेसिक शिक्षा

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

शनिवार, 17 अक्तूबर 2020, लखनऊ, पांच प्रदेश, 21 संस्करण, नगर संस्करण — www.livehindustan.com

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों हुई शुरुआत, 6675 शिक्षामित्रों को भी पक्की नौकरी का तोहफा

शिक्षकों को बांटे नियुक्ति पत्र

अच्छी खबर 1 — 05 शिक्षकों को नियुक्ति पत्र देकर वितरण कार्यक्रम शुरू किया — 31 हजार से ज्यादा शिक्षकों को दिया गया नियुक्ति पत्र

लखनऊ | विशेष संवाददाता

लखनऊ में गुरुवार को शिक्षकों को नियुक्ति पत्र देते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

अच्छी खबर 2 — फेस्टिवल एडवांस की सुविधा अब मार्च तक

अच्छी खबर 3 — बलरामपुर में केजीएमयू का सेटेलाइट सेंटर बनेगा

दैनिक जागरण लखनऊ, 20 अक्टूबर, 2020

आंगनवाड़ी केंद्रों में हो रही तैयारी — खेल-मनोरंजक गतिविधियों से बच्चों में विकसित की जाएंगी बुनियादी दक्षताएं

शिक्षा के पथ पर चलने का हुनर सीखेंगे नौनिहाल

केजीबीवी में समाप्त हुई 232 शिक्षकों की सेवाएं

लखनऊ, 22 अक्टूबर, 2020 दैनिक जागरण

समय सारिणी जारी — चयनित अभ्यर्थियों को 31 अक्टूबर से तीन नवंबर के बीच आवंटित स्कूल में ग्रहण करना होगा कार्यभार

नए सहायक अध्यापकों को 30 तक आवंटित हो जाएंगे विद्यालय

31,277 शिक्षक भर्ती — जिलों में 26 से 28 तक काउंसिलिंग, 29 और 30 तक स्कूल आवंटन, अपर मुख्य सचिव ने जारी किया शासनादेश

सफल अभ्यर्थियों को इंटरव्यू में शामिल करने का आदेश

हिन्दुस्तान 02
लखनऊ • सोमवार • 21 सितंबर 2020

शिक्षकों के दूसरे जिले में तबादले की अनुमति

लखनऊ | विशेष संवाददाता

54 हजार से ज्यादा शिक्षक और शिक्षिकाओं को मिलेगा लाभ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश के बाद सरकारी प्राइमरी स्कूलों में 54,120 शिक्षक-शिक्षिकाओं के अन्तर्जनपदीय तबादलों की अनुमति दे दी गई है। ये तबादले शिक्षक-शिक्षिकाओं को सहूलियत देने के लिए किए गए हैं।

TIMES CITY | UTTAR PRADESH

CM gives job letters to over 31k primary school teachers

6,675 Shiksha Mitras Too Get Appointment

31K TEACHERS GET JOB LETTERS IN UP

हिन्दुस्तान 06
लखनऊ • शनिवार • 11 अक्टूबर 2020

गुड-बैड टच के बारे में जानेंगी प्राइमरी की छात्राएं

जागरूक करेंगे — लखनऊ | प्रमुख संवाददाता

अभिभावकों को भी रोजाना विद्यालय बुलाया

---

2 दैनिक जागरण लखनऊ, 18 सितंबर, 2020

योजना — पहले चरण में करीब 28 हजार ग्राम पंचायतों के स्कूल फाइबर नेटवर्क से जुड़ेंगे

ब्रॉडबैंड इंटरनेट से जुड़ेंगे परिषदीय विद्यालय

Hindustan Times
LUCKNOW SATURDAY OCTOBER 17, 2020

Be friend, mentor to students, CM tells new asst teachers

Giving appointment letters to 31,277 assistant teachers, CM asks them to groom students

HT Correspondent

Chief Minister Yogi Adityanath with members of inter-ministerial central team at his official residence on Friday.

No more agitation, now teach with devotion, Yogi tells teachers

Chief minister Yogi Adityanath giving an enlarged replica of appointment letter to an assistant teacher on Friday.

लखनऊ जागरण
लखनऊ, गुरुवार 17 सितंबर, 2020 — नगर संस्करण

डीएलएड में प्रोन्नत करने के निर्देश

सीटी नर्सरी परीक्षा 2015-16

एनटीटी परीक्षा 2015-16 व 2016-17

---

13 दैनिक जागरण
लखनऊ, 5 सितंबर, 2020 — www.jagran.com

हमारे शिक्षक

नवाचार से मजबूत कर रहे शिक्षा की नींव

देश के दो हजार स्कूलों में इशरत का स्टाप

मिशन प्रेरणा

उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257—गोलागंज, लखनऊ